

वंदना



VANDANA



2024-25

हरियाणा सरकार द्वारा पुरस्कृत उत्कृष्ट महाविद्यालय
राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रोहतक

'B++' Grade College Accredited by NAAC



Message From The Principal



Dear students,

It gives me immense pleasure to pen down my thoughts for 'VANDANA' the Annual Magazine of our esteemed College. This publication is not merely a reflection of an academic year; it is a celebration of the talents, achievements, and aspirations of our vibrant student community.

The past year has been one of growth, resilience, and transformation. Our students have once again demonstrated that with determination and hard work, no goal is too distant. Whether in academics, sports, arts or social outreach, the young girls of our college have made us proud by constantly raising the bar and redefining success.

In accordance with the Moto of the college 'Know Thyself', our students not only recognise & strengthen their inner abilities, but also navigate a world that is rapidly evolving. I am heartened to see our students embrace innovation while staying rooted in values. This balance of intellect and integrity, confidence and compassion, is what truly defines empowered women. It is our mission as educators to nurture this spirit-to equip our students not just with degrees, but with the courage and conviction to be leaders, change-makers, and responsible global citizens.

I want to thanks our faculty, staff and parents for their unwavering support and commitment. I urge the students to keep dreaming, keep striving and never underestimate the power of their wisdom, voice and vision. Let this magazine stand as a testament to your creativity, hard work, and limitless potential.

Warm regards

Principal

Dr. Shamsher Singh Haada

Editorial Board

(2024-25)

Patron : Dr. Shamsher Singh Hooda (Principal)

Editor-in-chief : Dr. Rajesh Kumar, Assistant Prof., Dept. of Hindi



Sections

Hindi Section

English Section

Sanskrit Section

Science Section

Commerce Section

Maths Section

Women Cell

Staff Editor

Mr. Vishal Kumar

Dr. Niti Ahlawat

Dr. Rita Khanna

Dr. Shammy Laj

Dr. Sonia

Dr. Kusum

Prof. Veena Sachdeva

Student Editor

Ms. Annu

Ms. Sakshi

Ms. Kusum Sharma

Ms. Kirti

Ms. Gungun

Ms. Kirti

Ms. Anju Goyat



प्रधान संपादक की कलम से...



डॉ. राजेश कुमार
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग

प्रिय छात्राओं,

वर्ष-भर की उपलब्धियों और स्मृतियों को संजोए हुए महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'वंदना' आपको समर्पित है। यह पत्रिका एक ऐसा दर्पण जो हमारी छात्राओं की प्रतिभा, संवेदना और सृजनशीलता को प्रतिबिंबित करता है। 'वंदना' केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि उन स्वप्नों की अभिव्यक्ति है, जो छात्राओं के मन में पलते हैं और कर्म से साकार होते हैं।

आज की नारी सीमाओं को नहीं, क्षितिज को देखती है। वह केवल सपने नहीं देखती, उन्हें साकार भी करती है। शिक्षा, विज्ञान, कला, खेल या सामाजिक नेतृत्व हर क्षेत्र में वह अपनी छाप छोड़ रही है और यह महाविद्यालय इसका जीवंत उदाहरण है। यहाँ प्रत्येक छात्रा अपनी आंतरिक ऊर्जा-शक्ति को पहचानती है और उसे दिशा देती है। हर वर्ष की भांति यह वर्ष भी चुनौतियों और अवसरों से परिपूर्ण रहा। फिर भी हमारी छात्राओं, शिक्षकों एवं समस्त महाविद्यालय परिवार ने दृढ़ संकल्प, नवोन्मेष और पारस्परिक सहयोग से हर परिस्थिति को एक सीख में बदला।

इस वर्ष हमने न केवल अकादमिक उत्कृष्टता की दिशा में कदम बढ़ाए, बल्कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, सामाजिक सेवा और तकनीकी नवाचार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। हमारी छात्राओं की सफलता की कहानियाँ इस पत्रिका के पन्नों पर बिखरी हुई हैं जो न केवल उनके आत्मविश्वास की गाथा हैं, बल्कि आनेवाली छात्राओं के लिए प्रेरणा-स्रोत भी हैं। हमारा प्रयास रहा है कि यह पत्रिका हर आवाज को स्थान दे, चाहे वह कविता की कोमलता हो, कहानी की रोचकता हो, चित्र की कल्पना हो या विचारों की क्रांति हो। इस पत्रिका में संकलित रचनाएँ हमारी छात्राओं की उस सोच को सामने लाती हैं, जो समाज को बदलने का माद्दा रखती हैं।

प्रिय छात्राओं, याद रखिए आप केवल एक पाठ्यक्रम नहीं पढ़ रही हैं, आप भविष्य गढ़ रही हैं। हर पंक्ति जो आप लिखती हैं, हर प्रश्न जो आप पूछती हैं, और हर कदम जो आप आगे बढ़ाती हैं, वह समाज और राष्ट्र को नयी दिशा देने की क्षमता रखता है। आप प्रेरणा और प्रयास का समन्वय करते हुए इसी प्रकार अविराम आगे बढ़ती रहें। कहा भी गया है-

‘एक रास्ता है जिंदगी, जो थम गए तो कुछ नहीं।

ये कदम किसी मुकाम पर, जो जम गए तो कुछ नहीं।।’

अंत में, मैं संपादकीय मंडल, लेखकगण, डिजाइनर्स, प्रिंटर्स और सभी सहयोगियों का आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी निष्ठा और मेहनत से यह पत्रिका एक सुंदर स्वरूप ले पाई।

हिन्दी अनुभाग

प्राध्यापक-सम्पादक

श्री विशाल कुमार

सहायक प्रोफेसर

हिन्दी-विभाग



विद्यार्थी-सम्पादक

अन्नु

स्नातक (हिन्दी-प्रवीण) तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक 1221331064009

अनुक्रमणिका

क्रं. सं०	विषय	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादकीय...	श्री विशाल कुमार	4
2.	एक देशभक्त फिल्मकार का चले जाना	डॉ. राजेश कुमार	5
3.	सफलता की कुंजी	अन्नु	6
4.	ए नींद!	अन्नु	8
5.	ग़ज़ल — दिल और दुनिया	विशाल कुमार	8
6.	धन का मोह	अंजलि	9
7.	पिता	सृष्टि सिवाच	9
8.	एक दौर	दामिनी सैनी	10
9.	हमारा हरियाणा	भावना	10
10.	जिन्दगी का नया सफर	प्रीति खांडोदिया	11
11.	सुन ले तू प्रीत मेरी	कीमती	11
12.	ईमानदारी की सीख	महक	12
13.	टूटी कठपुतली	कीमती	13
14.	जीत पक्की है	अनीष्ठा	13
15.	कविता	योगिता	14
16.	वाह रे इंसान	सुनिधि	14
17.	खामोशियों की पुकार	राखी नरवाल	15
18.	नज़्म	मुस्कान	16
19.	कील, अँधेरा और रेत	तन्नु	16

सम्पादकीय संवेदनाओं की सृजनात्मक तरंग



श्री विशाल कुमार
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग

जब तक मनुष्य के हृदय में संवेदनाएँ जीवित रहेंगी, तब तक कविता का अस्तित्व अक्षुण्ण रहेगा। आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीनीकरण मानवीय संवेदनाओं की धुंधला रहे है, वहाँ हमारी छात्राओं की सृजनात्मक रचनाएँ आशा और उमंग का संचार करती हैं। इन रचनाओं में निहित संवेदनाएँ और भाषाई कुशलता हृदय को गहरी संतुष्टि प्रदान करती हैं।

सीमित जीवनानुभवों के बावजूद, छात्राओं ने अपनी रचनाओं में जीवन की गहरी समझ, सपनों, संघर्षों, और भावनाओं के द्वंद्व को बखूबी उकेरा है। इन रचनाओं में स्वाभिमान की व्यक्तित्व, सकारात्मक विचार और भावोद्वेग की सुंदर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

मुस्कान की नज्म जीवन के गहन अनुभवों को उर्दू शब्दों के चातुर्य और विशिष्ट शैली के साथ प्रस्तुत करती है। अन्नू की कविता 'ए नींद' नींद के साथ आत्मीय संवाद की तरह है, जो भावों की तरलता से ओतप्रोत है। कीमती हुड्डा की 'टूटी हुई कठपुतली' स्त्री जीवन की मार्मिक और कारुणिक झलक प्रस्तुत करती है। प्रीति की 'जीवन का नया सफर' कॉलेज में नवागत छात्रा के मनोभावों और गुरु-शिष्य संबंध की महत्ता को उजागर करती है। राखी की कविता 'खामोशियों की पुकार' वृद्ध और बच्चों के जीवन के मेल से समाधानों की ओर संकेत करती है, जबकि महक की रचना फौजियों के सम्मान में ओजपूर्ण और राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण है। योगिता की कविता पराजित मन को प्रेरित करती है। अंजलि, सृष्टि, दामिनी और भावना ने भी विविध विषयों पर पठनीय रचनाएँ दी हैं।

पत्रिका का यह हिन्दी अनुभाग रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता है, जिसमें हर रचना अपनी अनूठी खुशबू बिखेरती है। मुझे गर्व है कि 2022 में स्थापित 'नवोदित रचनाकार' व्हाट्सएप समूह ने छात्राओं को एक मंच प्रदान किया, जहाँ उन्होंने न केवल लेखन को निखारा, बल्कि एक सृजनात्मक कारवाँ बनाया। इस समूह के प्रोत्साहन और निरंतर अभ्यास का सुफल पत्रिका में प्रकाशित इन उत्कृष्ट रचनाओं के रूप में सामने आया है।

इन छात्राओं को उनकी रचनाओं के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ और आशीर्वाद। रचनाओं की उत्कृष्टता का मूल्यांकन पाठक करते हैं, और मुझे विश्वास है कि ये रचनाएँ पाठकों की प्रशंसा अर्जित करेंगी। साथ ही, यह आशा है कि ये रचनाएँ अन्य छात्राओं को भी हिन्दी में सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेरित करेंगी।

एक देशभक्त फिल्मकार का चले जाना



डॉ. राजेश कुमार
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग

4 अप्रैल 2025 को हिंदी सिने जगत् के महान् फिल्मकार मनोज कुमार इस दुनिया को अलविदा कह गए। मनोज कुमार का जन्म 24 जुलाई 1937 को एबटाबाद (पाकिस्तान) में हुआ था। उनका वास्तविक नाम हरिकृष्ण गिरि गोस्वामी था। अभिनय सम्राट् दिलीप कुमार से प्रभावित होकर वे सिने जगत् में आए और फिल्म 'शबनम' में दिलीप कुमार के फिल्मी नाम 'मनोज' को ही उन्होंने अपना लिया। सन् 1957 की 'फैशन' से लेकर सन् 1999 की 'जयहिन्द' तक अनेकानेक फिल्मों में उन्होंने अपनी कलाकारी के रंग बिखेरे। हरिकृष्ण से द लिजेंडरी 'मनोज कुमार' बनने तक का उनका सफर संघर्षों से भरा रहा। अभिनय के साथ-साथ वे लेखन और निर्देशन के उस उच्चतम मुकाम पर पहुँचे जहाँ उनका सम्मान दादा साहब फाल्के जैसे सर्वोच्च सिने अवार्ड से किया गया।

मनोज कुमार अपने फुफेरे भाई और निर्माता-निर्देशक लेखराज भाकरी के बुलावे पर बंबई आए। महीनों इन्तजार के बाद फिल्म 'फैशन' में छोटा-सा रोल मिला। इसके बाद 'पंचायत', 'सहारा', 'चाँद', 'शादी' और 'गृहस्थी' जैसी फिल्मों में वे छोटी-मोटी सहायक भूमिकाएँ करते रहे। 'काँच की गुड़िया' में नायक की भूमिका के बाद वे कई फिल्मकारों की नजरों में आ गए और 'बनारसी ठग', 'माँ-बेटा', 'रेशमी रूमाल', 'डॉ. विद्या', 'नकली नवाब' और 'अपना बना के देखो' जैसी फिल्मों में उन्हें नायक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इसके बाद 'हरियाली और रास्ता' (1962) ने उन्हें एक सफल अभिनेता के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। मनोज कुमार अपने संघर्ष के इस दौर में ही फिल्म-निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में रुचि लेने लगे थे। 'वह कौन थी' और 'हिमालय की गोद में' के लेखन और निर्देशन में उनका प्रमुख हाथ रहा। उनके इस 'घोस्ट' लेखन-निर्देशन यानि 'काम मेरा, नाम तेरा' की चरम उपलब्धि है; सन् 1965 में आई 'शहीद'। यूँ इसमें नाम तो केवल कश्यप और सीताराम शर्मा जैसे लोगों के दिए गए, पर असली काम मनोज कुमार ने ही किया था। भगत सिंह के जीवन पर बनी यह आज तक की सर्वाधिक सफल फिल्म है। "गुमनाम", 'पत्थर के सनम', 'पहचान', 'यादगार', 'बेईमान', 'संन्यासी' और 'दस नम्बरी' जैसी फिल्मों में उन्होंने अभिनय के साथ-साथ निर्देशन में भी अहम भूमिका निभाई। अपने आदर्श दिलीप कुमार के साथ स्क्रीन शेयर करते हुए उन्होंने 'आदमी' के भी कई दृश्य निर्देशित किए। 'मेरा नाम जोकर' में उन्हीं द्वारा लिखित और उन्हीं पर फिल्माए कुछेक दृश्य-संवाद ही उनकी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय देने के लिए पर्याप्त हैं। कुछ ही क्षणों के ये दृश्य सिद्ध कर देते हैं कि वे केवल राष्ट्र-प्रेम के ही सफल उद्घोषक नहीं, मुहब्बत के गहन अन्तरंग क्षणों को जीवन्त कर देने वाले फ़नकार भी थे।

'शहीद' की अपार सफलता ने मनोज के कैरियर की दिशा ही बदल दी। अब उन्होंने अपनी रचनात्मकता का केन्द्र देशभक्ति और सामाजिक सरोकारों को बना लिया। देश की माटी का गुणगान करनेवाली 'उपकार' मनोज कुमार के अधिकारिक लेखन और निर्देशन की पहली फिल्म है और इसी में उन्होंने आसमान छू लिया। इसमें धारण किया गया 'भारत' का अभिधान उनकी स्थायी पहचान बन गया। किसी भी फिल्मकार के लिए इससे अधिक गौरव की बात और क्या हो सकती है कि उसे उसके देश के नाम से ही जाना जाए ! मनोज के अतिरिक्त संसार में ऐसा गौरव शायद ही किसी अन्य कलाकार को मिला हो। मनोज कुमार ने इस नाम की गरिमा को न केवल समझा वरन् अक्षुण्ण भी रखा। वे न केवल फिल्मों में, वरन् जीवन में भी ऐसे कार्य करने से बचते रहे जिनसे इस नाम का अपमान हो।

फिल्म 'पूरब और पश्चिम' में मनोज कुमार ने भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा की, पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण को लताड़ा और प्रतिभा पलायन की प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया। पिता-पुत्र के आत्मीय संबंधों पर आधारित 'शोर' में उन्होंने उस पिता के संघर्ष और भाग्य-विडम्बना को दर्शाया जो अपने पुत्र के गुँगेपन का इलाज करवाने के लिए सब कुछ कर गुजरता है, पर जब उसके पुत्र को जुबान मिलती है तो वह स्वयं बहरा हो जाता है। इसके बाद आई 'रोटी, कपड़ा और मकान' में उन्होंने एक पढ़े-लिखे देशभक्त युवक की कहानी कही जो बेरोजगारी से तंग आकर पथ-भ्रष्ट तो अवश्य होता है पर अपना देशप्रेम, अपना जमीर, अपना विवेक नहीं छोड़ता। इस फिल्म में उन्होंने ही पहली बार अमिताभ बच्चन को 'एंग्री यंगमैन' की भूमिका दी थी। मल्टी स्टारर 'क्रान्ति' में उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया तो 'कलयुग और रामायण' में देशवासियों को अपने महान् धार्मिक आदर्शों को अपने जीवन में ढालने का संदेश दिया। 'शिरड़ी के साई बाबा' द्वारा उन्होंने साई के महात्मा को कीर्ति को देश-विदेश तक फैला दिया।

मनोज कुमार में देशभक्ति का नैसर्गिक जज्बा और अपनी संस्कृति की गहन समझ थी। इसी जज्बे और समझ को उन्होंने अपने हुनर के साथ मिलाया और ऐसी फिल्में बनाई जो हममें राष्ट्रीयता भी जगाती हैं और उत्तेजना भी, हमें मथती भी हैं और विचलित भी करती हैं। देशभक्ति को उन्होंने रोमांचक मार-धाड़ और गीत-संगीत की फंटेसी में इस प्रकार फिट किया कि उनकी हर फिल्म सुपर हिट होती गई। 'शहीद' से वे देशभक्ति के जिस ध्वज के वाहक बने उसे दो दशक तक सफलतापूर्वक लहराते-फहराते रहे। 'उपकार' तो 'उपकार', 'बलिदान' जैसी डाकू-गाथा और 'क्लर्क' जैसी मध्यवर्गीय जीवन-कथा में भी वे भगवा और तिरंगा लिए 'प्रणाम करो इस धरती को' और 'आज पन्द्रह अगस्त है'- गाते रहे। वस्तुतः राजकपूर जैसे फिल्मकारों ने युवा वर्ग को जिन सिनेमाघरों की चकाचौंध की तरफ आकर्षित किया था, मनोज ने उन्हीं सिनेमाघरों को मन्दिर बना दिया। देशप्रेम और राष्ट्र-गौरव के ऐसे मंदिर जहाँ भारत माता की पूजा होती है, भारतीय संस्कृति पल्लवित होती है। उनकी फिल्में हमें सपने ही नहीं दिखातीं, हमारे गौरवपूर्ण अतीत व विडम्बनापूर्ण वर्तमान से रूबरू भी कराती हैं।

राष्ट्र-गौरव व सांस्कृतिक मूल्यों का गान करने में मनोज कुमार ने गीत-संगीत को पर्याप्त महत्त्व दिया। 'मेरे देश की धरती सोना उगले', 'ए वतन ए वतन, हमको तेरी कसम', 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला', 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा', 'दुल्हन चलीं' और 'अब के बरस तुझे धरती की रानी कर देंगे' जैसे गीत, जिनके बिना कोई भी राष्ट्रीय पर्व, कोई भी सांस्कृतिक उत्सव नहीं मनाया जा सकता, अत्यंत उत्कृष्ट गीत हैं। मनोज कुमार को जहाँ भी लगा कि पटकथा का कोई प्रसंग गीत में ढलकर बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है, वहीं उन्होंने गीत की व्यवस्था कर दी। फलतः उनके गीत कथानक में रचे-बसे हैं। गहन विषादानुभूति हो अथवा आनन्द की सुखकारी लहर या फिर प्रणय के कोमलतम स्तर की अभिव्यक्ति; उनके गीत सभी स्थितियों को साकार कर देते हैं।

मनोज कुमार ने अनेक नए कलाकारों को अपनी फिल्मों में पहले-पहल मौका दिया। गीतकार सन्तोष आनन्द और राजकवि इन्द्रजीत सिंह 'तुलसी' को मनोज कुमार ही सिने जगत् में लाए थे। अभिनेत्री मिनाक्षी शेषाद्रि, फाइट कम्पोजर वीरू देवगन और संगीतकार जोड़ी उत्तम-जगदीश को भी मनोज ने ही अपनी फिल्मों में ब्रेक दिया था। अपने भाई राजीव गोस्वामी और पुत्र कुणाल गोस्वामी को उन्होंने क्रमशः 'पेन्टर बाबू' और 'रिक्की' में उतारा पर ये दोनों ही फिल्में असफल रहीं। 'रिक्की' में ही उन्होंने अपने दूसरे पुत्र विशाल गोस्वामी को पार्श्व गायक के रूप में पेश किया, पर वे भी सफल न हो सके। वस्तुतः 'क्रान्ति' (1981) के बाद मनोज कुमार की कोई भी फिल्म अधिक सफल नहीं हुई। 'रोटी कपड़ा और मकान' की तर्ज पर बनाई गई 'सन्तोष' और 'क्लर्क' को दर्शकों ने नकार दिया। 'देशवासी' और 'जयहिन्द' भी नहीं चल पाई। पिता की मृत्यु और भाई व बेटों के फिल्म इण्डस्ट्री में सफल न हो पाने का दुख मनोज कुमार को सालता रहा। बढ़ती उम्र और बीमारी ने भी उन्हें लाचार बना दिया। परंतु चाहे जो हो 'उपकार' के 'भारत' जैसे देशभक्त और 'पहचान' के 'गंगाराम' जैसे सदाशय युवक की उनकी छवि लोगों के दिल में सदा बसी रहेगी।

इस महान् देशभक्त फिल्मकार को भावभीनी श्रद्धांजलि !!

सफलता की कुंजी



अन्नु

विद्यार्थी - सम्पादक

स्नातक (हिन्दी-प्रवीण) तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक-1221331064009

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत और लगन बेहद ज़रूरी हैं। इस सफलता के मार्ग में आलस्य सबसे बड़ी रुकावट है। आलसी व्यक्ति मेहनत नहीं करता, बल्कि अपनी नाकामयाबी के लिए भाग्य को दोष देता है। वह सिर्फ बहाने बनाता है, जो उसे आगे बढ़ने से रोकते हैं। काम छोड़ना ठीक है पर उसे दोबारा शुरू न करके बहाने बनाना गलत है।

“आलस्य की राहें चुनकर इंसान,
मंजिल से दूर हो जाता वो नादान।।”

जीवन में हमें कई बार लगता है कि अब हम आगे नहीं बढ़ पाएँगे, यहीं सब कुछ छोड़ देना चाहिए। मगर यदि हम चुनौतियों का डटकर सामना करें तो कोई भी काम असंभव नहीं।

“डर को दिल से बाहर निकालो,
सपनों को अपनी उड़ान भरवा लो।
मुश्किल आएँगी राह में कई,
विश्वास से हर चुनौती को हरा लो।।

जीवन में सफल होने के लिए कड़ी मेहनत, निष्ठा और ईमानदारी के साथ अपने दिल की सुनना बेहद ज़रूरी है। अक्सर दुनिया की भीड़ में हम अपनी आंतरिक ध्वनि को अनुसुना कर देता हैं। जिसका नतीजा खालीपन एवं निराशा होती है। आज हम अपनी अंतरात्मा से ज्यादा दुनिया की सुनते हैं, जो बाद में परेशानी का सबब बनती है। हिन्दी अनुभाग के संपादक श्री विशाल कुमार (सर) की कविता इसी बात को उजागर करती है कि कैसे दुनिया की इस दौड़ में उलझना हमें मुश्किलों में डालता है।



ए नींद!



अन्नु

स्नातक (हिन्दी प्रवीण) तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक-1221331064009

सुन ए नींद ! आना तू कभी तनहा रातों को ...
पर न लाना साथ में तू अशको और यादों को
ए नींद ! आना तू कभी तनहा रातों को ॥

बता देना मगर आने से पहले ही ...
दे आँऊगी मैं न्यौता बिखरे ख्वाबों को ।
ए नींद ! आना तू कभी तनहा रातों को
बस न लाना साथ में, अशकों और यादों को ॥

दोनों साथ में बैठेगे उस पलंग पर फिर से ...
ठीक न कर पाई चादर जिसकी एक अरसे से ॥

फिर तुम बातें करना सुनूँगी, शांत मैं तुमको ...
बातें खूब सारी आजकल करती हूँ मैं खूद से ...
दोनो साथ में बैठेगे उस पलंग पर फिर से ...

सुन ए नींद ! आना तू कभी तनहा रातों को ...
बस न लाना साथ में तू अशकों और यादों को ।

सुनो एक काम है तुमसे बताऊँ ...
तुम करोगी क्या ?
मेरे दिन रात खाली हैं भरोगी क्या ?

बड़ा मायूस रहता है, मेरा मन
मेरे घर का ये आँगन भी ...
बस दो-चार दिन को ही मेरे घर में रहोगी क्या ॥

बताओ ना मेरे लिए तुम ये करोगी क्या ?
दो-चार दिन मेरे घर में रहोगी क्या ?

गज़ल - दिल और दुनिया



विशाल कुमार
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग

इस बात पर अब साध लेते हैं मौन,
अपना है कौन और पराया है कौन ।

दुनिया से बहुत दिल लगाया मगर,
दुनिया में दिल को देखता है कौन ।

बेग़रजी से दोस्ती हमने हमेशा की,
मगर बेग़रजी की अहमियत समझे कौन ।

हर काम किया ईमानदारी से,
पर ईमान की इज्जत करता है कौन ।

समझते थे दिल के आगे तन कुछ नहीं,
तन की कमी को छोड़ मन को देखे कौन ।

ग़फ़लत में थे कि कुछ समझते थे,
अब पूछते हैं खुद से तू है कौन ।

अपने ग़म से हमें हो गई मोहब्बत,
आखिर इस ग़म के सिवा हमारा है ही कौन ।

झूठी आशाओं में अब जीना छोड़ दिया,
मगर बिना उम्मीद के जीवन जिए कौन ।

ऐ दोस्त ! शायद दुनिया का यही दस्तूर है,
तुम दुनिया पर उँगली उठाने वाले होते हो कौन ।

दुनिया ऐसे ही चली थी चलती है और चलेगी
तुम इसमें दखलंदाजी करनेवाले होते हो कौन ।

तुम्हें ग़म प्यारा है और उनको खुशी प्यारी है,
तुम उनकी खुशी से जलनेवाले होते हो कौन ।

धन का मोह



अंजलि

बी.ए. (द्वितीय वर्ष)
अनुक्रमांक-1230222167

आजकल ऐसा समय आ रहा है,
धन को बड़ा बना रहा है॥
ना अपना लगता है कोई, सब लगता पराया,
दादा बड़ा न भैया-सबसे बड़ा रुपैया, मुहावरे की
साकारता का समय आया॥
ना किसी से मिलना है ना किसी से घुलना है,
रहती है इच्छा एक ही मन में बस पैसा साथ चलना है॥
पैसा जोड़ने के चक्कर में खुद को तोड़ते जा रहे हैं,
राक्षस बनते जा रहे हैं, इंसानियत छोड़ते जा रहे हैं॥
पैसा ऐसे जोड़ने में व्यस्त हैं,
ऐसा लगता है कि जिन्दगी बस पैसों से ही मस्त है॥
ना पैसा साथ जाएगा, ना हीरे जवाहिरात,
कुछ जाता है तो साथ वो है बस अपना व्यवहार॥
इंसान पैसा कमाता दिन-रात है,
क्योंकि उसे इसके अलावा सब लगता बकवास है॥
पैसा कमाने में इतना मगरूर है,
जिसने पैरों पर खड़ा किया अब उन्ही के सामने पैसों का
गुरूर है॥
माँ-बाप बच्चों से बातें करने का करते हैं इंतजार,
लेकिन उन्हीं के लिए समय नहीं है, बच्चों के पास॥
मत इतना धन जोड़ने में मगरूर हो ए-इंसान,
धन की अति कर देगी तुझे परेशान॥
इतना कमा जितने में चल जाए काम,
ज्यादा कमाने में तो नष्ट हो जाएगा तेरा आराम॥
रख थोड़ा घरवालों का भी ख्याल,
क्योंकि घरवालों के अलावा तो सब है पैसे के यार॥

पिता



सृष्टि सिवाच

बी.एससी. (लाईफ साईंस) प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक-1244036140

खोया-खोया सा मैं रहता हूँ,
किसी को अब कुछ ना कहता हूँ,
ना जाने कितने दुःखों से मैं हर रोज लड़ता हूँ,
अपनो को खुश देखने के लिए
मैं अकेला सब दुख सहता हूँ॥
ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा से ऐसा था,
एक जमाना था, मैं भी हर पल हँसता था,
अपने गाँव की गलियों में, बेफिक्र होकर खेलता था॥
फिर न जाने कब जवान हुआ,
इस दुनिया के सच से रूबरू हुआ,
पिता के साए में महफूज हुआ,
जिम्मेदारियों सर आई तो तकलीफों का एहसास हुआ॥
अब जिम्मेदारियों का जीवन जीता हूँ मैं,
अपनों के लिए हर पल दुनिया से भिड़ता हूँ मैं,
हल्की-सी खरोच आने पर रोनेवाला मैं,
अब सारे जख्म चुपचाप सह लेता हूँ मैं॥
खोया-खोया-सा मैं रहता हूँ,
किसी को अब ना कुछ कहता हूँ,
ना जाने कितने दुःखों से मैं हर रोज लड़ता हूँ,
अपनो को खुश देखने के लिए,
मैं अकेला सब दुःख सहता हूँ॥
कौन हूँ मैं ... ?
अपने बच्चों का पिता, एक औरत के माथे का सिंदूर हूँ मैं,
एक पिता की उम्मीद, एक माँ के आँचल में पला बेटा हूँ मैं,
एक पिता हूँ मैं॥

एक दौर



दामिनी सैनी
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)
अनुक्रमांक-1230222005

एक दौर था,
जब अपनों का जोर था
हसीन सपने, हसीन जिंदगी,
जिम्मेदारियों से परे।

बस जिंदगी जीने की उमंग थी
उमंग नए-नए रंग भरने की,
कुछ अलग कर गुजरने की,
आसमान को छूने की,
स्वच्छंद उड़ान भरने की।

बंदिशों का होश नहीं
जिम्मेदारियों का बोझ नहीं।
वो एक अलग ज़माना था,
वो दौर-ए बचपना था।

पर कदम भ्रम-ए हसीं दुनिया में रखा,
मुख दुनिया इस हसीं का दिखा।
जानकर स्वार्थपूर्ण संसार को,
मंदिर-ए-अन्तर्मन दुखा।

उम्र की इस कैद में कहाँ वो ज़माना खो गया,
इतना बड़ा नहीं होना था, मुझे जितना मैं हो गया।

एक दौर वो याद बन गया।
उम्र की इस कैद में नाशाद बन गया।
अंतर्मन में होती पीड़ा, स्मरण करूँ
जब वो एक नादानी भरी होड़,
लेकिन कहाँ से लाऊँ वो बचपन-ए दौर॥

हमारा हरियाणा



भावना
बी. ए. (तृतीय वर्ष)
अनुक्रमांक-1221331002414

क्या लिखूँ तेरी शान पे,
तेरी पहचान निराली है।
दूध, दही है खाणा जिसका,
हरियाणा की हर बात निराली हैं।
तू पहचान है, शान है हमारी,
तू गुरुर है और जान है हमारी।
तेरी बोली बड़ी अनोखी है,
हरियाणा की हरियाणवी बड़ी चोखी है।
धोती-कुर्ता, सिर पर पगड़ी,
बस यही तेरा पहनावा है।
देसी खाणा और सीधा सादा बाणा,
देशा में देश है भारत,
और भारत में है हरियाणा।
तूने जन्म दिया उन वीरों को,
जो बॉर्डर पर तैनात हैं।
तेरे खिलाड़ी और पहलवान
बढ़ा रहे देश-विदेश में तेरी शान हैं।
खेती है शान यहाँ की,
तेरे किसान तेरे रखवाले हैं।
हरियाणा के हैं हम, और
हरियाणा के रहने वाले हैं॥
हरियाणा के रहने वाले हैं॥

जिन्दगी का नया सफर



प्रीति खांडोदिया

स्नातक (प्रथम वर्ष)

अनुक्रमांक-1240222175

12वीं का परिणाम आया, देख परिणाम दिल को खुश पाया...
लेकिन दिल में एक अजीब-सा डर भी आया ॥

क्योंकि अब गाँव छोड़ शहर जो जाना था...

तरक्की की राह में एक नया कदम बढ़ाना था ॥

अब तो लड़की कॉलेज जाएगी ...

अब तो इसकी बुद्धि भ्रमाएगी ॥

इस सोच को मुझे बंद करवाना था...

इसीलिए दिल का जायज घबराना था ॥

समझाया पापा ने बेटा आगे आना होगा...

अपने इस डर पर काबू तुझे पाना होगा ॥

मान पापा की बात नए शहर में रखा कदम ॥

शुरू हुआ जिन्दगी का एक नया चरण ॥

बढ़ी मैं आगे, थी मन में कुछ शंकाएँ...

लेकिन एक कोने में दबी थी आगे बढ़ने की इच्छाएँ ॥

पैर डगमगाए, जब कक्षा में प्रवेश किया...

वो सर ही थे जिन्होंने आगे बढ़कर साथ दिया ॥

जिन्होंने निडर हो ईमानदारी से काम करना सिखाया...

गलत होने पर सहना छोड़, लड़ना सिखाया ॥

चंद महीने में उन्होंने प्रतिभा को मेरी निखारा ...

कुछ कर सकती हूँ मैं भी, आत्मविश्वास मुझमें उभारा ॥

चमकोगी तुम भी एक दिन बनकर सितारा ...

कुछ कर सकने का विश्वास मेरे अंदर सर ने उभारा ॥

कहे सब मैंने जो थे मेरे दिल के हालात ...

हृदय से करना चाहूँगी मैं सर का धन्यवाद ॥

सुन ले तू प्रीत मेरी



कीमती

बी.ए. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक-1230222159

तुलना मैं तेरी किससे करूँ,

दूर तुमसे होने को डरूँ।

तुम वेग से आए हो,

ईश्वर की भांति समाए हो।।

जाने कैसी मनहूस घड़ी थी,

जब मैं तुमसे दूर खड़ी थी।

मिलने को तुमसे बहाने करूँ,

तुमसे बिछड़ूँ तो मैं मरूँ।।

प्रीत जो तुमसे लागी है,

जंग ये भीतर जागी है।

कैसे अपने पथ पे रहूँ,

दुख ये मीठा कैसे सहूँ।।

दिल की नज़्म कुछ ऐसी कहूँ,

साज़ ये तेरे खो जाएँ।

दूर तुझसे ना मैं रहूँ,

कुदरत के करिश्में हो जाएँ।।

तहरीर का जादू ऐसा हो,

ज़हन जो चाहे तू वैसा हो।

खामोश सी आँखे जो भी कहें,

तू बैठ सिरहाने सुनता रहे।।





ईमानदारी की सीख

महक

बी.एससी. (गतिण ऑनर्स) तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक-1221331091041

एक दिन एक बच्चे को जुनून चढ़ा था,
उस खाखी वर्दी की खातिर वह हर किसी से लड़ा था ॥

क्या सदी क्या गमी, घड़ी तक उसने देखी नहीं,
न दिन रात की परवाह की, मेहनत उसने छोड़ी नहीं ॥

फिर एक दिन उसकी मेहनत रंग लायी,
उसके नाम की घर पर एक चिट्ठी आई ॥

चिट्ठी में लिखा उसकी मेहनत का परिणाम था,
आज माँ की आँखों में आँसू थे, पिता के चेहरे पर नाज़ था ॥
जिस दिन के लिए किया था बेसब्री से इंतजार, वह दिन आज था ॥

पर, उनको क्या पता था,
उनकी जिंदगी में आने वाला तूफान था ।
आज उसके सामने खड़ा भ्रष्टाचार का कोहराम था ॥

उस अफसर का मन आज बहुत परेशान था,
एक तरफ था ईमान, दूसरी तरफ भ्रष्टाचार था ॥

आस-पास देखा तो सबको बस पैसे दिख रहे थे,
सब चेक पर अपनी-अपनी कीमत लिख रहे थे ॥

उससे भी उसकी कीमत पूछी गई थी ।
वर्दी के आगे न उसे कुछ याद आया,
उनके पैसे को उसने पल में ठुकराया ॥

उसको थी अपनी शिक्षा की बात याद आई,
जिन्होंने थी उसे ईमानदारी की परिभाषा समझाई ॥

उनकी उसी सीख की वजह से आज
वह उस मुकाम पर खड़ा था,
करूँगा भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म इस बात पर अड़ा था ॥

उस शिक्षा की मेहनत उस दिन रंग लाई थी,
समाज में बदलाव की नई उम्मीद आई थी ॥

उस अफसर ने न कभी किसी से रिश्तत ली थी
उस दिन वर्दी उसने बड़े गर्व से पहनी थी ॥

न लूँगा गलत पैसे, न गलत काम करूँगा,
न लूँगा रिश्तत न किसी को लेने दूँगा ॥

इसी सोच से हमें आगे बढ़ना है ।
वर्दी पहन शपथ लेने से पहले,
एक ईमानदार इंसान बनना है ॥

जब हर युवा सच्चाई का रास्ता अपनाएगा,
तभी तो हमारा देश भ्रष्टाचार-मुक्त बन पाएगा ॥



टूटी कठपुतली



कीमती

बी.ए. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक-1230222159

सुन साँवरे तुझे सुनाऊँ, उसकी ये डगर-कहानी,
जिसके आँचल में है दूध, आँखियन में है पानी।

जिस घर तूने आदेश किया, बेटी बनकर जन्म जिया,
बचपन के आगोश में खुलकर, जीवन उसने लिया।
मुस्कान ऐसी आई रे, गुँजार किलकारियों की छाई रे,
पापा भी गले लगाते थे, अधर उसके मुस्काते थे।।

छोड़ दामन लड़कपन का, जब यौवन की ओर बढ़ी,
नई उमंगे, नए सपने, आँखियन में संजोने लगी।
वेदी के वो सात फेरे, अनजाने के संग चली,
द्रौपदी-सा चीर हरण, वो अनचाही-सी रात कटी।।

मर्यादा की बेड़ी में बँधकर, समझौते का विष सहा,
बेगाने बंधन से उपजे, नौ महीने का काल चला।
ना साथ मिला परमेश्वर का, पति की जगह पतित मिला,
फिर भी जग ने उस अबला को, साधारण-सी नारी कहा।

जागी उमँगें जागे सपने, बालक से जब गोद भरी,
नयनों से उसके भव निहारे, सपने जब वो बुनने लगी।
समय बदला, बदली पीढ़ी, नारी से अब वो वृद्धा हुई,
संतान के संतापों से दुख की बदली वो अबला हुई।।

साहस बचा न उस नारी में, देख कैसी ये दशा हुई,
टूटे सपने, टूटी उमंगें लेकर भव से विदा हुई।।

जीत पक्की है।



अनीष्ठा

बी.एससी. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक-1230246021

कुछ करना है, तो डटकर चल,
थोड़ा दुनियाँ से हटकर चल।
लक पर तो सभी चल लेते हे,
कभी इतिहास को पलटकर चल।

बिना काम के मुकाम कैसा ?
बिना मेहनत के दाम कैसा ?
जब तक ना हाँसिल हो मंज़िल,
तो राह मैं, आराम कैसा ?

अर्जुन-सा निशाना रख,
मन में ना कोई बहाना रख।
जो लक्ष्य सामने है,
बस उसी पे अपना ठिकाना रख।

सोच मत, साकार कर,
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल,
किसी ओर का ना इंतजार कर।

जो चले थे अकेले,
उनके पीछे आज मेले हैं।

जो करते रहे इंतजार
उनकी जिंदगी में आज भी झमेले हैं।

सोच बदलो, जिंदगी बदलो !
संकल्प के साथ
विकल्प अपने आप मिल जाएँगे।

कविता



योगिता

बी.एससी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक-1230246012

घुट-घुट कर जीना छोड़ दे, तू रूख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा, लोगों के भ्रम को तोड़ दे।
तू छोड़ ये आंसू उठ हो खड़ा, मंजिल की ओर अब कदम बढ़ा,
हासिल कर एक मुकाम नया, पन्ना इतिहास में जोड़ दे।

घुट-घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रूख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भ्रम को तोड़ दे।

उठना है तुझे नहीं गिरना, जो गिरा तो फिर से उठना है,
अब रुकना नहीं एक पल तुझको, बस हर पल आगे बढ़ना है,
राहों में मिलेंगे तूफ़ान कई, मुश्किलों के होंगे वार कई,
इन सबसे तुझे न डरना है, तू लक्ष्य पे अपने जोर दे।

घुट-घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रूख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भ्रम को तोड़ दे।

चल रास्ते तू अपने बना, छू लेना अब तू आसमां,
धरती पर तू रखना कदम, बनाना है अपना ये जहाँ,
किसी के रोके न रुक जाना तू,
लकीरें किस्मत की खुद बनाना तू,
कर मंजिल अपनी तू फतह,
कामयाबी के निशान छोड़ दे।

घुट-घुट कर जीना छोड़ दे,
तू रूख हवाओं का मोड़ दे,
हिम्मत की अपनी कलम उठा,
लोगों के भ्रम को तोड़ दे।

वाह रे इंसान !



सुनिधि

बी.एससी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक-1230246020

लाश को हाथ लगाता है तो नहाता है,
पर बेजुबान जीव को मार के खाता है।
छोड़ देते हैं, भोजन जिसमें एक बाल है,
फिर क्यों खाते हो अंडा
जिसमें एक माँ का लाल है।

एक पत्थर सिर्फ एक बार मंदिर जाता है,
और भगवान बन जाता है।
इंसान हर रोज मंदिर जाता है फिर,
भी पत्थर बन जाता है।

एक औरत बेटे को जन्म देने के लिए
अपनी सुन्दरता त्याग देती है।
और वही बेटा एक सुन्दर बीवी के लिए
अपनी माँ को त्याग देता है।

जीवन में हर जगह हम जीत चाहते हैं,
सिर्फ फूलवाले की दुकान ऐसी है।
जहाँ हम कहते हैं कि हार चाहिए,
क्योंकि हम भगवान से जीत नहीं सकते।

खामोशियों की पुकार



राखी नरवाल

बी.ए. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक - 1230222133

एक छोटा बच्चा,
आँखों में प्यारे-प्यारे सपने बुनता।
उन्हीं सपनों में खो जाता,
जब उसे कहीं प्यार ना मिलता।
असंख्य गमों की चादर में,
अभागा वो तन्हा
अपनी मासूमियत से अनकहे दर्द था छिपा रहा।
आस-पास खेलते बच्चे उसमें प्यार की चाह जगाते,
वह कितना अकेला है, उसे यह अहसास कराते।
फिर उसकी आँखों की चमक धुँधली हो जाती,
काश! मेरी भी माँ होती, जो मुझे इतना चाहती।
बस उसी पल कोई आए और उसे गले से लगा ले,
और उसके सारे गमों को छुपा ले।
जिससे भूल जाए वह सारे दर्द व मन खुशियों से भर जाए,
और इस स्वर्ण लम्हे में सारा संसार खो जाए।
वहीं एक बूढ़ी अकेली बैठी, रोज
अपने दिन गिनती है अपने बच्चों को
याद कर हर लम्हा तड़पती है
बच्चों के फोन की घंटी अब सुनाई नहीं देती,

शायद काम में व्यस्त होंगे इसलिए बात नहीं होती।
इसी तरह रोज अपने मन को दिलासा देती है।
उनकी याद में पल-पल सिमटती रहती है।
उसकी खामोशी में छिपी है एक कहानी,
जो कभी सुनाई नहीं देती, वो है एक अनकही जिंदगानी।
उनकी आदतें खुद में ढ़ालकर खुश होती रहती है
उनकी प्यार भरी शरारतें याद कर,
मन ही मन हँसती रहती है।
अपने काँपते हुए हाथों से,
अपने जिगर के टुकड़ों की तस्वीर निहारती रहती है।
हर रोज उनकी खुशी की दुआएँ करती रहती है।
हर रोज उनकी खुशी की दुआएँ करती रहती है।
दिल में छुपा है दर्द, आँखों में बसा है पानी।
बच्चे और बुजुर्ग, दोनों की है यही कहानी।
बुजुर्ग लोग जो अकेले हैं, उनके पास कहानियाँ हैं,
बस उन्हें कोई सुनने वाला चाहिए।
बच्चे जो तन्हा हैं, उनके पास सपने हैं,
बस उन्हें कोई प्यार भरा हाथ चाहिए।
हर एक हाथ बढ़े जब कोई मुश्किल में हो,
काश! हर दिल में संवेदना हो, जब भी कोई अकेला हो।

नज़्म



मुस्कान

स्नातक (अंतिम वर्ष)

अनुक्रमांक-1221331002115

खाक में मिलने को, खाक में मिलते रहे बरसों
और क्या खाक मिला, जिंदगी खाक करते-करते ॥

सुकुन पाने को, सुकुन खो बैठे बरसों
सुकुन से न मिला कोई क़तरा,
सुकुन हासिल करते-करते ॥

एक झूठ छुपाने को, झूठ उगलते रहे बरसों,
झूठ का कीचड़ बढ़ता गया, झूठ को सच करते-करते ॥

नदामत से तौबा मगर, नदामत में ही रहे बरसों,
नदामत, फरैब करार दी, वाकई नदामत करते-करते ॥

चिराग की लौ से डरे हुए, चिराग जलाते रहे बरसों,
चिराग तिलिस्मी बना, चिरागों से रोशनी करते-करते ॥

बेगाने दुख को मोल लिया, बेगानों के रहे बरसों,
बेगानों ने ही मार दिया, अपनों सा सुलुक करते-करते ॥



कील, अंधेरा और रेत



तन्नु

बी.ए. तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक-1221331002175

काले घने अंधेरे में मैं झुकी,
अंधेरा नहीं झुका, ठहरा रहा वहीं, उसी जगह
आँख में कुछ चुभा, मुझे लगा अंधेरा चुभा,
पर अंधेरा पीछे हटा,
एक हँसी बिलकुल कान के पास से आई,
कील बोली - मैं चुभी,
अंधेरा कभी नहीं चुभता,
बस खलता है,
चुभती तो कील है,
अखरती तो बस कील है।
आँख नदी-सी बहने लगी,
रेतीले पानी-सी धुँधली हुई,
खुलते-खुलते मिच गई।
कील हँसी, हँसती गई,
आँख खुली, कहने लगी-प्रकाश तेज चुभता है,
बाकी सब कुछ मुझे दिखता है।
अँधेरा हँसा, खूब हँसा, हँसते-हँसते
प्रकाश खिला, खलता अँधेरा दूर हुआ।
दिन की रोशनी में हथौड़ी पड़ी,
पैनी कील खूँडी हो-हो मुस गइ।
रेतीला धुँधला पानी साफ हुआ,
रेत सारा नीचे बैठ गया।
नदी के पानी में अब,
हरियाली का वास हुआ।

English Section

Staff Editor

Dr. Niti Ahlawat

Assistant Professor

Department of English



Student Editor

Sakshi

B.A. II (English Hons.)

Roll No. 1230226016

INDEX

Sr No.	Name of The Article	Name of Writer	Page No.
1.	Editorial	Dr. Niti Ahlawat	18
2.	Under The Velvet Sky	Sakshi	19
3.	English is Hard	Sakshi	19
4.	English is Funny Language	Sakshi	19
5.	Addiction Of Social Media	Srishti	20
6.	Childhood	Nancy	21
7.	AI (Artificial Intelligence)	Gunjan	22
8.	Through The Eyes Of A Small Girl : Reflection On The Outside World	Varsha	23
9.	Happiness	Muskan	24
10.	Parents are the form of God	Simran	24
11.	Surprise !!	Sarvika Sangwan	25
12.	Isn't it awe-some !!	Sarvika Sangwan	25
13.	Social Media : A Double Edge Sword	Swamita	26
14.	My English Boon is out to get me	Priyanka Dahiya	27
15.	Beleive in Thyself	Sarvika Sangwan	27
16.	Riddles	Priyanka	28

Editorial...



Dr. Niti Ahlawat

Assistant Professor

Department of English

College life is considered as the golden period in one's life, one would realize the essence of this statement in the latter part of life while in capturing the sweet memories of the days spent during college. But one thing is sure, the exposures and experiences a student gains during studies could be channelized for a successful future.

A college magazine is a mirror of the college life. The role of a college magazine is vital in promoting what an institution offers. This cultivates a fine literary taste among the students.

I would like to motivate our students to be sincere and focused. In the journey of education and life sincerity and focus are two indispensable companions. Sincerity is about being true to your work, your values and your purpose. Focus on the other hand, is what keeps you on track when distractions pull you in every direction. In this digital age, where our attentions are constantly under siege from screens and notifications, maintaining focus has become both more difficult and more crucial than ever. You must learn to prioritize your time and energy. Have clear goals and remind yourself regularly of why you started. Students as you move ahead in your academic journey and life beyond, remember these three pillars - hardwork, sincerity and focus. College is a milestone not a destination. It is a beginning not an end. Make the most of this time and let it be the spring board for all that you aspire to achieve. Believe in yourself, commit to your goals, and keep moving forward, no matter how hard the road may seem. The future belongs to those who prepare for it today. And I have no doubt that among you are the leaders, thinkers and change-makers of tomorrow.

Wishing you all the very best on your journey.

UNDER THE VELVET SKY



Sakshi

B.A. (English Hons)-II
Roll No. 1230226016

The sun dips low, a fiery kiss,
Oh hills that slumbers, green and bliss.
The air grows cool, a gentle sigh,
As stars begin to paint the sky.

A symphony of crickets chirps,
A chorus of the night, that never sleeps.
The moon, a pearl, hangs high and bright,
A beacon in the velvet night.

A whisper of the wind, a soft caress,
On leaves that dance, in silent blessedness.
The world holds its breath, in peaceful trance,
As nature sleeps, in a gentle dance.



ENGLISH IS HARD

1. The bandage was wound around the wound.
2. The dump was so full that it had to refuse more refuse.
3. I did not object to the object.
4. The insurance was invalid for the invalid.
5. When shot at, the dove into the bushes.

ENGLISH IS A FUNNY LANGUAGE

An oxymoron is usually defined as a phrase in which two words of contradictory meaning are brought together :

1. Clearly misunderstood
2. Exact Estimate
3. Small crowd
4. Pretty ugly
5. Only choice
6. Act naturally
7. Found missing
8. Fully Empty
9. Seriously funny
10. Original Copies

And the Mother of all
Happily married

ADDICTION OF SOCIAL MEDIA



Srishti

BA-II English (Hons.)

Roll No. 1230226052

In this digital age, Social Media has swiftly become an integral part of our lives. Social Platforms were designed to enhance our connection but evolved into a global concern : Social media addiction. Social networking is a relative phenomenon in the world of the web. The spread of social media and information technology (IT) has been rapid in recent years.

In the era of digitization, where life revolves around online interfaces the world has witnessed an unprecedented surge in the use of social media platforms. These platforms were originally designed to connect people irrespective of physical barriers have today become a blessing and a curse.

Social Media addiction, is the excessive and compulsive use of platforms like facebook, twitter, tiktok and many other. This compulsivity often hampers daily activities, relationships and the mental well being of users. One may wonder why does such a benign tool have such a gripping hold?

Firstly, Social Media offers instant gratification. The 'like', 'Share', 'Comments' and 'followers' act as digital affirmation. This rewarding mechanism urges users to continuously check and engage with their profiles, seeking validation and acceptance.

Secondly, the fear of missing out (FOMO) plays a significant role. With continuous updates and notification, users are pushed into believing that they might miss out on significant events, news or updates, if they don't constantly check their feeds. This phenomenon of always being in loop coerces many into obsessive usage patterns.

The effects of this addiction are not subtle, physically, excessive screen time leads to strain on eyes, poor posture, sleep disturbances Psychologically, the effects are even more daunting. Research consistently shows that heavy social media users reports higher level of anxiety, depression, loneliness and even suicidal tendencies. The constant comparison with peers and celebrities and even strangers can significantly by evade their self esteem and self worth.

Additionally, relationships suffers : The irony of social media is that while it claim to connect people, it often pull them in life and in reality. Face to Face interaction diminish, as more time is spent online. Leading misunderstandings and feeling of isolation and weakened personal ties.

To counteract this addiction, awareness is first step. Recognising and accepting the problem enables individual to setup boundries, where one conciously unplugs himself from social and online interfaces, it can be beneficial to schools and institution can also integrate courses on responsible and mindful social media usage.

In conclusion, social media is a tool, its impact positive or negative, is in the hand of user. Like every tool, when misused, it cause harm. However, with awareness and with responsibility, its addictiveness could be minimized, ensuring it remains what it is intended for: a medium to genuinely connect and share.

CHILDHOOD



Nancy

B.A 1st year

Roll No. 1240222292

My Childhood memories are like golden time for me. I was born and brought up in a very adorable family. I have grown up with my younger brother and elder sister with whom I used to play a lot. I remember each and every game we used to play together. Every moment is very precious to me. In the afternoon we used to play cricket in our nearby ground. The memories of playing in the ground are mesmerizing. Another beautiful thing I can remember is flying kites. It used to be one of the most exciting thing of my childhood. Even the older member of my family participated with us.

We made one zoo visit every year. They used to be those very simple yet fun filled family picnic moment. We used to carry packed food from home which my mother cooked. My elder sister would click several photographs. When I look at those pictures now, the memories come alive. Today many things have changed but my childhood memories are still fresh in my heart. It feels so refreshing to relive them, again and again. My childhood memories are very close to my heart and make me smile on my difficult days.

AI (ARTIFICIAL INTELLIGENCE)



Gunjan

BA-I (Pass)

Roll No. 1240222154

AI refers to the development of computer systems that can perform tasks that typically require human intelligence, such as : Learning, Problem Solving, Reasoning, Perception, Language understanding.

1) Types of AI :

- **Narrow or Weak AI** : Designed to perform a specific task, such as facial recognition, language translation or playing chess.
- **General or Strong AI** : A hypothetical AI System that possesses human-like intelligence, capable of reasoning, problem-solving and learning across various domains.
- **Super Intelligence** : Significantly more intelligent than the best human minds, potentially leading to exponential growth in technological advancements.

2) Real World Applications of AI

- **Virtual Assistants** : Siri, Google Assistant and Alexa use natural language process (NLP) to understand voice commands.
- **Image Recognition** : Facebook's facial recognition, technology and self driving cars object detection systems rely on machine learning algorithms.
- **Healthcare** : AI powered diagnosis tools personalized medicines and robotic surgery are transforming the medical landscape.
- **Customer Service** : Chatbots and virtual customer assistants provide 24x7 support, enhancing user experience.

3) Benefits of AI :

- Increased Efficiency and productivity.
- Enhanced Decision-Making.
- Solutions to complex problems
- Empowering Business with Predictive analytics and automation.

THROUGH THE EYES OF A SMALL GIRL : REFLECTION ON THE OUTSIDE WORLD



Varsha

BA-II (Eng. Hons)

Roll No. 1230226054

Growing up in a world that constantly surprises and challenges me in both exhilarating and bewildering. As a small girl, my perspective is unique - shaped by curiosity, innocence, and a yearning to understand the intricacies of life outside my immediate surroundings. The outside world is a vibrant tapestry of experiences, emotions, and lessons, each day presenting opportunities for growth and discovery.

One of the first things I notice when I step outside is the beauty of nature. The colors and sounds around me are a wonderland - green leaves rustling in the breeze, vibrant flowers swaying gently, and the warm sun kissing my cheeks. Nature teaches me about life in its simplest form : the joy of a blooming flower or the warmth of a sunny day brings happiness that feels contagious.

As I venture out, I encounter other children, each with their own stories and dreams. Making friends is like opening a treasure chest filled with laughter, shared secrets and the joy of play. I cherish those moments spent swinging at the playground, building sand castles, and creating imaginary worlds where anything is possible. Friendships teach me the importance of kindness, sharing, and understanding values that shape who I am and who I aspire to be.

Yet the outside world is not always a fairy tale. I sometimes feel overwhelmed by the noise and chaos of a bustling city or the complexity of adult conversations. There are moments when I perceive unkindness and witness adults arguing or children being left out. These experiences can be confusing and painful. They remind me that while the world is filled with beauty, it also harbors challenges that I must learn to navigate. Each challenging experience teaches me resilience and empathy, helping me grow stronger.

As I grow older, I notice the world is constantly changing. New buildings rise, trees are cut down, and different cultures blend in our neighborhoods. While this can be exciting, it sometimes makes me nostalgic for things that have disappeared. Change teaches me to adapt and embrace new experiences, encouraging to be open minded and hopeful about what lies ahead.

Being a small girl in a vast, dynamic world is an adventure filled with wonder and lessons. The beauty of nature , the joy of friendships, the challenges encountered and the thirst for knowledge all shape my understanding of life.

While I may feel small in a world so big, every experience is a stepping stone on my path to becoming who I am meant to be. with each new day, I embrace the opportunities that await me, eager to learn, grow and contribute to the world around me. My journey has just begun and I am excited to see where it will lead.

HAPPINESS



Muskan

BA-IIInd

Roll No. 1221331002115

Please anybody tell me the way of
happiness,
I don't know,
Where I find it,
But really; I just want it.
Even I'm not happy and also not sad
I'm just empty and just quiet.
I don't know, what's going on beside,
It looks like a dark night.
Really I'm missing something,
Really I want something
But also I don't know what it is.
Please anybody tell me, the reason of
happiness
I don't know, how I feel it,
But really I just want it.
Please anybody tell me the meaning of
happiness, I don't know
However I understand it,
But really I just want it.

PARENTS ARE THE FORM OF GOD



Simran

BA-IIInd

Roll No. 1221331062017

The Form of God are,
Parents on the earth.
They deeply love us,
From their heart.
Our guardian angels,
Our super hero.
Always there for us,
in Joy or Sorrow
They work continuously,
Without any rest.
They are heavenly souls,
They are the best.
So grateful for, the
Year we have had
Parents love forever,
Without end.
So grateful for you.
I'll always love you.



SURPRISE !!

Sarvika Sangwan

BA-I (Eng. Hons.)

Roll No. 1240226013

It's our body and we all think that we know about it quite well, but actually the human body is a marvel of intricate systems and surprising facts, some of which are.

- We all appreciate a dog's ability to detect various scents, but a human nose is no less. It has the capability of detecting over one TRILLION scents. Shocked? But it's true!
- Just like snakes, humans too change their skin; that too 1,000 times in a LIFETIME!
- We have heard about unique fingerprints, but did you know that every human has a UNIQUE TONGUEPRINT too?
- Our body stops growing at about the age of 22, but our EARS continue to GROW!!
- If you pinch the skin of your ELBOW you won't feel any pain! Astonished? TRY IT!
- Here's a bonus fact – ONLY HUMANS HAVE CHINS! It is true.

ISN'T IT AWE-SOME!!

- The world is a mind-boggling place. Turns out our little, blue planet is actually more like a big, thick ENCYCLOPEDIA of knowledge just waiting to be discovered.
- We all know that the VATICAN CITY is the smallest country on Earth, but did you know, its population is just – 1,000 ... less than a DISTRICT!
- Our Indian has a unique peninsular structure, but it wasn't always like this. 550 MILLION YEARS AGO, the PANGEA drifted apart from ANTARCTICA and joined the present Indian. Subcontinent! Shocking, but TRUE!
- DID YOU KNOW? AFRICA is the only continent that covers four Hemispheres!
- AUSTRALIA – THE SMALLEST CONTINENT – is actually wider than the MOON!!
- We think the HIMALAYAS is the largest mountain range, but actually the UNDERWATER – Mid – ocean ridge system is larger!
- BONUS FACT – 90% of the world's population lives in the Northern Hemisphere.

SOCIAL MEDIA : A DOUBLE EDGE SWORD



Swamita

M.Sc. (Physics) 1st Year

Roll No. 2244186051

- **Power and Pitfalls of Social Media**

In today's digital age, social media has become an integral part of daily life. From connecting with friends and family to building global businesses, platforms like facebook, Instagram, X (formerly Twitter), Tik Tok and Linked In have revolutionize how we communicate, share and lonsum information.

- **The Rise of a Digital Society**

Social media has transformed communication into a real – time, borderless exchange. It empowers individual to express opinion, showcase talents, and stay informed about current events. For businesses. It's a powerful marketing tool that enables direct engagement with customers and brand – building on a personal level.

- **Impact on Society**

On the positive side, social media fosters global awareness, supports social movements and helps marginalize voices be heard. It's a hub for creativity, innovation and connection. Many people have found commuinities of support, especially during times of isolation like the covid 19 pandimic. However, it also has its downsides. The spread of misinformation, cyberbullying, privacy concern, and mental health issues like anxiety and depression are serious challenges. The pressure to portray a “perfect” life online can lead to unrealistic comparision and self – esteem problems, especially among young users.

- **The Need for Balance**

As with any powerful tool, balance and responsibility are key. Users must stay informed about privacy setting, recognize fake news and take regular breaks to maintain mental wellness. At the same time tech companies must be held accountable for the content and algorithms they promote.

Conclusion

Social media is a double – edge sword – offering immense potential for connection and growth, while also requiring careful navigation. When used mindfully, it can be a force for good, empowering individuals and communities across the globe.

MY ENGLISH BOON IS OUT TO GET ME



Priyanka Dahiya

BA.-1 (Eng. Hons.)
Roll No 1240226034

When I open my English book
I feel my soul just slowly shook
It stares at me with evil glee-
"Guess the theme or you won't be free,"
Miss called it a poem, but whert's the rhyme?
It feels like someone who forgot this time.
Shakespeare talks like he's from mars,
"Thou" and "thee" and "all these stars!"
"Write "an essay", the teacher said
My mind went blank My pen went dead
"Be creative make it shine!"
Okey, here's a sentence: "
The cow was fine There's with a poem about
a rainy cloud,
hidden meaning... deep and proud.
But I just see a soggy sky- How's that a
metaphor? Oh my!
But still, I try, I read, I write,
Even when nothing sounds quite right.
But in the end, let's be fair -English is
everywhere!

BELIEVE IN THYSELF



Sarvika Sangwan

BA-I (Eng. Hons.)
Roll No. 1240226013

Believe in yourself and the power within.
Believe the faith you have deep inside.
Behold inner peace and in wisdom confide.
Believe in your goodness and in your desire
to do good.
Believe in yourself and that all things are
possible.
Believe in yourself and step out unafraid for
missgivings and doubts be not easily
swayed.
Believe in your worth – to others and to you
Don't dwell on your weaknesses.
We all have a few
Believe in compassion for others as well as
yourself.
Believe that the sun shines after the rain.
If you don't get hurt you'll never gain.
Believe in tomorrow- the dawn of a new day.
In taking the hard road day-by-day sweeping
obstacles away.
Every obstacle, fear and struggle along the
way,
is there to make us stronger with each and
every passing day,
be trusting in God and let faith lead the way.



RIDDLES

Priyanka

BA. Final Year

Roll No 1221331002820

1. I speak without a mouth and hear without ears. I have no body, but I come alive with the wind. What am I?
2. The more you take, the more you leave behind. What am I?
3. What can travel around the world while staying in the same corner?
4. What has hands but can't clap?
5. I'm tall when I'm young, and short when I'm old. What am I?
6. What begins with T, ends with T, and has T in it?
7. You see me once in June, twice in November, but not at all in May. What am I?
8. I'm not alive, but I grow; I don't have lungs, but I need air; I don't have a mouth, but water kills me. What am I?
9. I have cities, but no houses. I have mountains, but no trees. I have water, but no fish. What am I?
10. I am always in front of you, but you can't see me. What am I?
11. I am full of holes but still hold water. What am I?
12. The more you take away from me, the bigger I become. What am I?
13. What comes once in a minute, twice in a moment, but never in a thousand years?
14. What word is spelled incorrectly in every dictionary?
15. What gets wetter the more it dries?
16. I'm light as a feather, but even the world's strongest man can't hold me for long. What am I?
17. I go up but never come down. What am I?
18. What can fill a room but takes up no space?
19. What belongs to you, but other people use it more than you do?
20. I have one eye but can't see. What am I?

19.	Your name	20.	A needle	18.	Light
16.	Your breath	17.	Your age	15.	A towel
13.	The letter "M"	14.	Incorrectly	12.	A hole
10.	The future	11.	A sponge	9.	A map
7.	The letter "e"	8.	Fire	6.	A teapot
4.	A clock	5.	A candle	3.	A stamp
1.	An echo	2.	Footsteps		

Answers:

संस्कृत अनुभाग

प्राध्यापक-सम्पादक
डॉ. रीटा खन्ना
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत-विभाग



विद्यार्थी - सम्पादक
कुसुम शर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक 1221331002207

अनुक्रमणिका

क्रं. सं०	विषय	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ सं०
1.	संस्कृत	डॉ. रीटा खन्ना	30
4.	परोपकारः	कुसुम	31
3.	गुरु	शालू	31
2.	मम पिता (मेरे पिता)	प्रीति खांडोदिया	32
5.	संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्	ईशा	33
6.	सत्संगतिः अथवा सत्संगतिः कथन किन्तु करोति पुंसाम्	प्राची	33
7.	मम पिता	अन्नु कादयान	34
8.	विद्यार्थी जीवन	अन्नु	35
9.	संस्कृत प्रहेलिका	प्रीति खांडोदिया	35
10.	शिष्टाचारः (शिष्टाचार)	प्रीति खांडोदिया	36
11.	लक्ष्मी का स्वभाव	स्नेहा	37

सम्पादकीय... संस्कृत



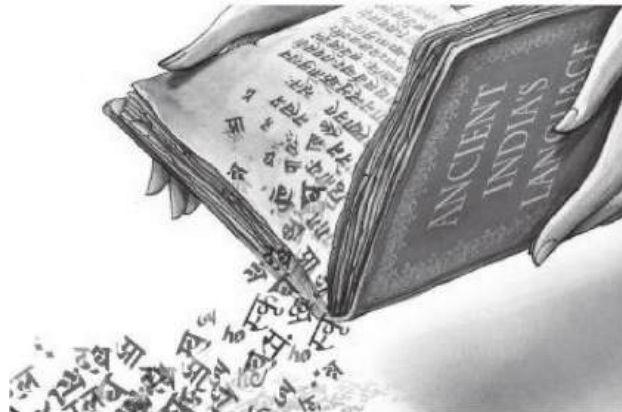
डॉ. रीटा खन्ना

सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग

संस्कृतम् जगतः अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृतम् भारतस्य जगतः च भाषासु प्राचीनतमा। संस्कृता वाक्, भारती, सुरभारती, अमरभारती, सुखाणी, गीवणिवाणी, गीर्वाणी, देववाणी, देवभाषा, देवीवाक् इत्यादिभिः नामभिः एतद् भाषा प्रसिद्धा।

भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृत शब्दा उपयुक्ताः। संस्कृतात एव अधिका भारतीयभाषा उद्भूताः तावदेव भारत युरोपीय भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राप्पुर्य च प्रदर्शयन्ति।

व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारं – प्रदायिनी भवति। अष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षिपाणिनेः विरचना जगतः सवसिपं भाषाणाम् व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थान इवास्ति। संस्कृतवाङ्मयं विश्वाङ्ग्ये स्वस्य अद्वितीयं स्थानम् अलङ्करोति। संस्कृतस्य प्राचीनतम ग्रन्थाः वेदाः सन्ति। संस्कृतभाषा न केवलं धर्म-अर्थ-काम साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक इतिहास-काव्य-नाटक-दर्शनादिभिः अनन्तवाङ्मयरूपेण मोक्षात्मकाः चतुर्विधपुरुषार्थ हेतु भूताः विषयाः अस्याः लौकिक-परलौकिक विषयैः अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी।



परोपकारः



कुसुम
बी.ए. पास कोर्स
अनुक्रमांक-1221331002207

परोपकारः अथवा परोपकाराय सतां विभूतयः

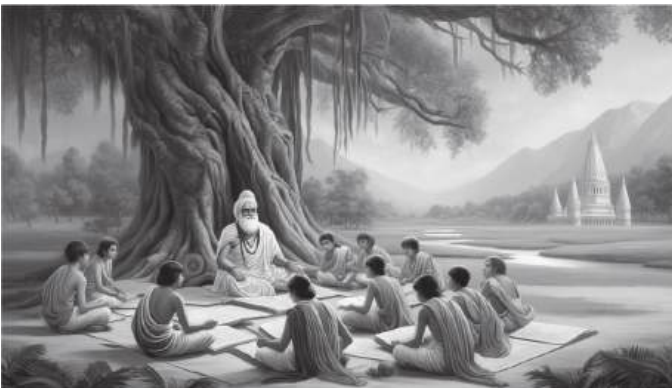
परेषां उपकारः परोपकारो वर्तते। परेषां अन्येषां वा हिताय यत् कार्यं क्रियते स एव परोपकारो भवति। परोपकारः एको उत्तमो गुणो वर्तते। संसारे एतस्य गुणस्य महिमा सदा गीयते। परोपकारयुक्तः जनः सदा दयावान्, कृपायुक्तः, नम्र आद्रीभूतश्च भवति। परोपकाराय पुण्यस्य प्राप्तिर्भवति परपीडनाय पापं भवति। यथा च कथितम्।

‘परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्’

संसारे अनेके जनाः परोपकार परायणाः अभवत्। तेषां नामानि इतिहासः गायति। ते अमरा अभवन्। महाराजा शिविः शरणागतस्य कपोतस्य रक्षां कर्तुं स्वशरीरस्य मांसमपि श्येनाय अददात्। महर्षि-दधीचिः स्व स्थीनि अपि देवेभ्यः दत्तवान्। महर्षि दयानन्दः, महात्मा गाँधी महोदयः सुभाषचन्द्रश्च देशाय स्व - जीवनानि त्यक्तवन्तः।

कथितम् च - परोपकाराय सतां विभूतयः।

परोपकारेण एव मानवेषु प्राणिषु वा सुखं शान्ति वा जायते। परोपकारः सर्वेषां सद्गुणानाम् सारो वर्तते। अतएव सज्जनाः सदा परोपकारिणः भवन्ति।



गुरु



शालू
बी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक-1240222057

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर ।

गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

अर्थ :- गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है।

गुरु साक्षात् परब्रह्म है, उन सद्गुरु को मेरा प्रणाम।

धर्मज्ञो धर्मकर्त्ता च सदा धर्मपरायणः।

तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुच्यते ।।

अर्थ :- धर्म को जाननेवाले, धर्म के अनुसार आचरण करने वाले, धर्मपरायण और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करने वाले गुरु कहे जाते हैं।

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुतषाफलं श्रुतं ज्ञानम्।

श्रुतज्ञानं फलं मोक्षः मोक्षफलं सुखं सदा।

अर्थ :- विनय का फल सेवा है, गुरु की सेवा का फल ज्ञान है, ज्ञान का फल मोक्ष है, और मोक्ष का फल सदा सुख है।

आचार्येणैव, शिष्यः सर्वशास्त्रार्थ, विज्ञानाति

विनाऽध्यापकं ज्ञानं न शिष्यस्यैव सिध्यति

अर्थ :- आचार्य के द्वारा ही शिष्य सभी शास्त्रों का अर्थ जानता है। बिना अध्यापक के शिष्य का ज्ञान असफल है।

प्रेरक सूचकावैव, वाचूको दर्शकस्तथा ।

शिक्षको बोध्यकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः ।।

अर्थ :- प्रेरणा देने वाले, सूचना देने वाले, सत्य बताने वाले ज्ञान का मार्गदर्शन करके शिक्षा प्रदान करने वाले और बोध कराने वाले - ये सब गुरु के समान हैं।

मम पिता (मेरे पिता)



प्रीति खांडोदिया

बी.एससी. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक-1230246012

किं वदामि मम शब्दं नास्ति,

मम पितुः सदृशः कोऽपि व्यक्तिः नास्ति।

अर्थ - क्या कहूँ मैं कोई लफ़्ज़ नहीं,
मेरे पापा जैसा कोई शख्स नहीं।

जन्मतः अद्यपर्यन्तं मम एतावत् प्रेम दत्तवान्,
मम अग्रजपुत्रीत्वस्य आधिकारं दत्तवान्।

अर्थ - जन्म से आज तक मुझे इतना प्यार दिया,
बड़ी बेटी होने का मुझे अधिकार दिया।

अहं कन्या अस्मि किन्तु अहं पुत्रवत् पालितवान्,
लघु-वृहत प्रत्येकं समस्यायां मां संभालन्तु।

अर्थ - बेटी हूँ, मगर बेटों-सा मुझे पाला,
छोटी-बड़ी हर तकलीफ में मुझे संभाला।

बहिः अतीव कठोरं दृश्यते,

परन्तु हृदयं अतीव मृदुलम् अस्ति।

अर्थ - बाहर से दिखते हैं बड़े कठोर,
लेकिन दिल से हैं बड़े कोमल।

सर्वे भ्रातरः पापा - डुली,

पापा मम राजा, अहं तस्य राजकुमारी अस्मि।

अर्थ - सभी भाई - बहनों में पापा की दुलारी हूँ,
पापा मेरे राजा, मैं उनकी राजकुमारी हूँ।

पापा मम जीवनम् पापा मम तादात्म्यं,

पापा मम जगत पापा मम आकाशः अस्ति।

अर्थ - पापा मेरी जान है, पापा मेरी पहचान है,
पापा मेरा जहान है, पापा मेरा आसमान है।

जीवनस्य प्रत्येकं मोडने भवता मम समर्थनं कृतम्,

सदैव अग्रे गन्तुं प्रेरितवान्।

अर्थ - जीवन के प्रत्येक मोड़ पर मेरा साथ दिया, आगे बढ़ने के
लिए हमेशा प्रेरित किया।

पितुः एकः एव इच्छा अस्ति,

कन्यायाः जीवने कदापि नीहारः न भवतु।

अर्थ - पापा की बस एक ही है अभिलाषा, बेटी के जीवन में ना
हो कभी कुहासा।

किं वदामि मम वचनं नास्ति,

मम पितुः सदृशः कोऽपि व्यक्तिः नास्ति।

अर्थ - क्या कहूँ मैं कोई लफ़्ज़ नहीं,
मेरे पापा जैसा कोई शख्स नहीं।

माता-पिता च उभयोः दायित्वं निर्वहन्ति,

कदाचित् मातृत्वेन क्वचित् पितृत्वेन च स्वप्रेम व्यज्यते।

अर्थ - माता-पिता दोनों का दायित्व निभाते हैं, कभी माँ तो
कभी पिता बनकर वो प्यार जताते हैं।

किं वदामि मम शब्दं नास्ति

मम पितुः सदृशः कोऽपि व्यक्तिः नास्ति।

अर्थ - क्या कहूँ मैं कोई लफ़्ज़ नहीं, मेरे पापा जैसा कोई शख्स
नहीं।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्



ईशा

बी.ए. तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक-1221331002087

सत्संगतिः अथवा सत्संगतिः कथन किन्न करोति पुंसाम्



प्राची

बी.ए. तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक-1221331002652

अस्मिन् संसारे अधुना अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति । तासु भाषासु संस्कृत-भाषा प्राचीनतमा प्रमुखतमा सर्वोत्तमा च वर्तते । इयमेव देशस्य च सर्वासां भाषानां जननी वर्तते । भारतवर्षस्य पालि-प्राकृत-अपभ्रंशादयः भाषाः संस्कृतात् एव निसृताः सन्ति । एताः संस्कृतस्य पुत्र्यः सन्ति । हिंदी बंगाली-गुजराती-मराठी-कन्नड-तेलुगु-तमिल-इत्यादीनां आधुनिकी-भाषानां संबंधः संस्कृतभाषया सह वर्तते । प्राचीनकाले एषा भाषा समस्ते भारतवर्षे प्रचलिता आसीत् विदेशेभ्यः आगत्य विद्वांसः अत्रैव संस्कृत-भाषायां ज्ञानं अर्जयन्ति स्म । एषा भारतवर्षे चतुर्दिशायां व्याप्ता आसीत् । एषा राष्ट्रभाषा, देशभाषा वा आसीत् । सर्वत्र एषा प्रसिद्धा लोकप्रिया च आसीत् । सर्वे भारतवासिनः अस्यामेव वार्ता कुर्वन्ति स्म । अद्यापि संस्कृतं विना आधुनिकभाषाणां ज्ञानं अपूर्णं वर्तते । विज्ञान-क्षेत्रे, चिकित्सा-क्षेत्रे, गणित-क्षेत्रे, राजनीति-क्षेत्रे, न्याय-क्षेत्रे च अस्याः भाषायाः एव महान् सहयोगो वर्तते । आध्यात्मिक ज्ञानं, धर्मज्ञानं, न्यायपरिज्ञानं च अस्मां भाषायां वर्तते ।



सतां सज्जनानां वा संगतिः सत्संगतिः कथयते मानवः सत्संगत्मा प्रभावेण विनम्रः, विनीतः, सम्मः, सम्मानमोग्मश्च भवति । कुसंगत्या कारणेन मानवः दुष्टः दुर्जनः, पापपरायणः, हीनः अकारुणिकश्च भवति मानवजीवने संगत्माः प्रबलं करोति जामते । भो जनः मादृशी संगतिः करोति तस्मै जीवनं तथैव भवति । मे बालकाः सज्जनैः महं वसन्ति, कार्यं कुर्वन्ति, भ्रमन्ति, पठन्ति, ते सज्जनाः गुणवन्तः, दयापरायणाः, नम्राः विनीताश्च भवन्ति । मपि दुष्टाणां बालकानां संगतिः कुर्वन्ति तदा तु अविनीताः पापाः दुराचरिणः असदमार्गाभिनश्च भवन्ति । अतएव संगत्माः महान् प्रभावो जामते । यथा चोक्तम् 'संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति ।'

सत्संगतिः मानवजीवने आत्मावश्मकी वर्तते । सत्संगत्मा एव पापः पुण्यात्मा भवति, चरित्रहीनः चरित्रवान् भवति, अधार्मिकः धार्मिको भवति, अशिक्षितः विद्वान् जायते अधमः सम्मानं लभते । गुणरहिताः गुणिनः भवन्ति । सत्संगतिरेव मानवजीवने प्रतिष्ठा ज्ञानं, बलं, समृद्धिः, तेजः, बुद्धिः, सुखं, शान्तिश्च वितरितः । सत्संगतिः बुद्धिहीनस्य जाड्यं हरति, वचने सत्यं विञ्चति, मनोन्नतिं ददाति, पापं अपाकरोति, चेटः प्रसादयति, दिक्षु कीर्तिं तनोति, मनसि शान्तिं आकलयति, हृदये सुखं करोति ।

मम पिता



अनु कादयान

बी.ए. (हिंदी ऑनर्स) तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक-1221331064009

यदि अहं रोदयामि स्म तर्हि ते तान् रोदितुम् न दद्युः ।

क्षुधार्तः उदरं कदापि निद्रां न ददाति ।

एकः एव पिता मनुष्यः आसीत् ।

ये मम एतावत् प्रेम कुर्वन्ति स्म ।

अर्थ :- मैं रोती थी तो वे रोने नहीं देते थे,

भूखे पेट कभी सोने नहीं देते थे ।

एक पापा ही तो थे यार,

जो करते थे मुझसे इतना प्यार ।।

तस्य चतुःवादनं चतुर्वादने, चायं भोजनं कुर्वन्

मम पिता कियत् कटुतां प्राप्तवान् इति वदन्

तान् पुरुषान् चिडयितुं कियत् सुन्दरं रोचते स्म ।

एकः एव पिता आसीत् यः मां एतावत् प्रेम करोति ।।

अर्थ :- उनका चार बजे वो कड़क चाय पिलाना

तथा मेरा 'छिः पापा कितनी कड़वी बनी है'

कहकर उनको चिढ़ाना, कितना अच्छा लगता था यार ।

एक पापा ही तो थे जो करते मुझसे इतना प्यार ।।

ते पुनः दिल्लीनगरं पुनः पुनः आगच्छन्ति ।

आगच्छन्तं जालेबी-समोसन् च माम् आनयन्तु ।

मम भ्रातुः मातुः निगूढं निगूहचि च ।

कथं नीचः बन्धु च पापा मम एतावत् प्रेम करोति स्म ।

अर्थ :- उनका वो बार-बार दिल्ली आना-जाना,

और आते वक्त मेरे लिए जलेबी और समोसे लाना ।

मेरा भाई और मम्मी से छुपा छुपाकर खाना ।

कितना अच्छा लगता था यार ।

और पापा ही तो करते थे मुझसे इतना प्यार ।

मम दूरभाषः तान् चीनीभाषां आह्वयन् तान् विडयितुं ।

तथा च तान् उच्चैः हसन् तान् तत् दरिद्रं पुरुषम् इति वदन् ।

अहं व्याधिः, तेषां नेत्रयोः अश्रुपातः च भवति ।

अहं स्मरामि यत् अहं वैद्यात् मम कृते युद्धं कर्तुं शक्नोमि ।

सः कियत् व्ययति, मनुष्य, केवलं पिता केवलं यः

मां एतावत् प्रेम करोति स्म ।

अर्थ :- मेरा उनके फोन को वो चाइनीज कहकर उनको चिढ़ाना

तथा उनका वो गरीब आदमी कहकर मुझे जोर से हंसाना ।

मेरा वो बीमार हो जाना,

और उनकी आँखों में आँसू आना ।

मुझे याद है मेरे लिए उनका वो डॉक्टर तक से लड़ जाना ।

कितना खलता है यार

एक पापा ही तो थे जो करते थे मुझसे इतना प्यार ।।

ते पुनः दिल्लीनगरं गच्छन्ति ।

न पुनः आगत्य सम्यक् आगन्तुम्

कियत् कन्या मित्रं सहते ।

एकः एव पिता आसीत् यः मां एतावत् प्रेम करोति ।

पितुः अभावः एताः कन्याः बहु करोति ।

यत् तेषां छायायां कन्याः नाजाभिः सह वर्धन्ते ।

अर्थ :- उनका वो फिर से दिल्ली जाना,

सही-सलामत लौटकर न आना,

एक बेटी को कितना खला यार

एक पापा ही तो थे जो करते मुझसे इतना प्यार ।।

एक पापा की कमी इन बेटियों को बहुत खलती है,

क्योंकि उन्हीं के साये में बेटियाँ नाज़ों से पलती हैं ।

विद्यार्थी जीवन



अनु
बी.ए. प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक-1240222703

काक चेष्टा बकोध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च ।
अल्पाहारीं गृहात्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम् ।।
कौवे की तरह प्रयास, बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह नींद
अल्पाहार और घर त्यागना, ये विद्यार्थी के पाँच लक्षण हैं ।
विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च
विद्या बन्धुजनों विदेशगमने, विद्या परं दैवतं ।।
विद्या यात्रा में मित्र है, पत्नी घर में,
विद्या बंधु है विदेश यात्रा में,
विद्या ही परम देवता है ।
विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ।।
विद्या विनय देती है, विनय से योग्यता प्राप्त होती है, योग्यता से
धन प्राप्त होता है, धन से धर्म और फिर सुख ।
आलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रं, अमित्रस्य कुतः सुखम् ।।
आलसी को विद्या कहाँ से मिलेगी, विद्या बिना धन कहाँ, धन के
बिना मित्र कहाँ और मित्र के बिना सुख कहाँ ?
उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।
केवल प्रयास से कार्य सिद्ध होते हैं, इच्छा करने से नहीं, सोये हुए
सिंह के मुँह में मृग प्रवेश नहीं करते ।

संस्कृत प्रहेलिका:



प्रीति खांडोदिया
बी.एससी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक-1230246012

- वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः,
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः ।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी,
जलं च बिभ्रत् न घटो न मेघः ।।
उत्तराणि :- नारिकेलफलम् (नारियल)
- न तस्यादिः न तस्यान्तः, मध्ये यः तस्य तिष्ठति ।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति, यदि जानासि तत वदम् ।।
उत्तराणि :- नयनम् (नेत्र)
- अस्ति कुक्षी शिरो नास्ति, बाहु रस्ती निरंगुली ।
अहतो नर भक्षीचा, यो जानाति सः पण्डितः ।।
उत्तराणि :- युतकम् (कमीज)
- कृष्णमुखी न मार्जारी, द्विजिह्वा न च सर्पिणी ।
पञ्चभर्ता न पाञ्चाली, यो जानाति सः पण्डितः ।।
उत्तराणि :- लेखनी (कलम)
- भोजनम् न खादति,
पिबति न जलम् ।
निरन्तरम् चलयति,
बोधयति च समयम् ।।
उत्तराणि :- घटिका (घड़ी)
- अपदो दूरगामी च,
साक्षरो न च पण्डितः ।
अमुखः स्फुटपवक्ता च,
यो जानाति सः पण्डितः ।।
उत्तराणि :- (पत्रम्) पत्र
- धरायाः उपरि अधः अपि वसति ।
धूम भूत्वा गगने इतस्ततः भ्रमति ।।
उत्तराणि :- जलम् (जल)

शिष्टाचारः (शिष्टाचार)



प्रीति खांडोदिया

बी.एससी. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक-1230246012

1. अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थ :- यह मेरा है अथवा पराया है, ऐसी गणना तो छोटे हृदय वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो यह सारी पृथ्वी ही परिवार है।

2. आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

अर्थ :- आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है। परिश्रम के समान अन्य कोई बन्धु नहीं है जिसको करने से वह कभी दुखी नहीं होता।

3. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थ :- कार्य परिश्रम करने से ही सफल होते हैं, इच्छा करने मात्र से नहीं। क्योंकि पशु (मृग) सोए हुए सिंह के मुख में अपने आप प्रवेश नहीं करते हैं।

4. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

अर्थ :- प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी संतुष्ट होते हैं। इसलिए मनुष्य को प्रिय वचन बोलने चाहिए। बोलने में कैसी दरिद्रता (कंजूसी)।

5. वृत्तं यत्नेन संरक्षेद, वित्तमेति च याति च।

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।

अर्थ :- चरित्र की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए क्योंकि धन तो आता जाता रहता है। धन के नष्ट होने से कुछ भी नष्ट नहीं होता परन्तु चरित्र से हीन व्यक्ति तो मरे हुए के समान है।

6. पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्यः,

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।

नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः,

परोपकाराय सतां विभूतयः।।

अर्थ :- जिस प्रकार नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीती हैं। वृक्ष स्वयं अपने फलों को नहीं खाते हैं। बादल अन्न को स्वयं नहीं खाते हैं। ठीक इसी प्रकार सज्जनों की संपत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं।

7. विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मम् ततः सुखम्।।

अर्थ :- विद्या मनुष्य को विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से मनुष्य योग्यता को प्राप्त करता है। योग्यता से वह धन को प्राप्त करता है, धन से धर्म को प्राप्त करता है तथा धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

8. माता मित्रं पिता चेति स्वभावात् त्रितयं हितम्।

कार्यकारणत्वाऽन्ये भवन्ति हितबुद्धयः।।

अर्थ :- माता, मित्र तथा पिता ये तीनों स्वभाव से हितकारी होते हैं तथा अन्य सभी कार्यकारण भाव से हित करने की बुद्धि वाले होते हैं अर्थात् हित करने की सोचते हैं।



लक्ष्मी का स्वभाव

स्नेहा

बी.ए. प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक-1240222587

1. ओलकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि सुभटखड्गमण्डलोत्पलवन-विभ्रमभ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात् पारिजातपल्लवेष्वो रागम्, इन्दुशकलादे-कान्तवक्रताम्, उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहन शक्तिम्, मदिरायाः मदम् कौस्तु कौस्तुभमणेनैष्ठुर्यम्, इत्येतानि सहवासपरिचयवशाद् विरहविनोदयिहानि गृहीत्वोदगता। न ह्येवंविधमपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति यथेयमनार्या।

सरलार्थ :- कल्याण में अपने को लगाने वाले आप पहले लक्ष्मी को ही देख लें। कुशल योद्धाओं के तलवार समुह रूपी कमल-वन में घूमनेवाली भ्रमरी रूपा यह लक्ष्मी क्षीर सागर से तरलता को कल्पवृक्ष के पल्लवों से राग को, चन्द्रमा के अंश से पूर्णतः टेढ़ेपन को, उच्चैःश्रवा नामक घोड़े से चंचलता को, कालकुट विष से मोहन करना, शक्ति को, मदिरा से मद को, कौस्तुभ मणि से कठोरता को इस प्रकार इन सबके साथ रहने के परिचय के कारण वियोग में दिल बहलाव के लिए चिह्नों को लेकर निकली है। यहाँ संसार में निश्चय ही इस प्रकार की अपरिचित कोई भी वस्तु नहीं है, जैसी यह दुष्टा लक्ष्मी।

2. लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते। दृढगुणसन्धाननिष्पन्दीकृतापि नश्यति। उद्यामदर्पभट-सहस्रोल्लासितासिलपातज् जरविधृताप्यपक्रामति। मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघन घटापरिपालितापि प्रपलायते। न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालीकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति। न वैदग्ध्यं गणयति। न श्रुतमाकर्णयति। न त्यागम द्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति। न सत्यमेवबुध्यते। न लक्षणं प्रमाणीकरोति।

सरलार्थ :- यह लक्ष्मी प्राप्त हुई भी निश्चय ही बड़ी कठिनता से पालन की जाती है। अहंकार वाले हजारों योद्धाओं से चमकायी गई तलवार रूपी लताओं के पिंजरे में विशेष रूप से रखी गई भी दूर चली जाती है। मदजल की वर्षा से अंधकार करने वाले हाथियों द्वारा विरचित मेघमाला से रक्षित हुई भी भाग जाती है। न परिचय की रक्षा करती है। न उच्च कुल को देखती है। न सुन्दरता को देखती है। न धर्म की परवाह करती है। न त्याग का आदर करती है। न किसी विषय के विशेष ज्ञान का विचार करती है। न सदाचार का पालन करती है। न सत्य को ही जानती है। न श्रेष्ठ लक्षणों को प्रमाण मानती है।

3. गन्धर्वनगर लेखेव पश्यत् एव नश्यति। अद्याप्यारूढमन्दर परिवर्तावर्त भ्रान्तिजनितसंस्कारेव परिभ्रमति। कमलिनीसंचरण व्यतिकरलग्नलिननालकण्ठ कक्षतेव न क्वचिदपि निर्भरमाबध्नाति पदम्। अतिप्रयत्नविधृतापि परमेश्वरगृहेषु विविधगन्धग जगण्डमधुपानमत्तेव परिस्खलति। पारूष्यमिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति। विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिमा नारायणमुर्तिम्। अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुचितमूलदण्ड कोशमण्डलमपि मुच्चति भूभुजम्।

सरलार्थ :- गन्धर्व नगर की रेखा के समान यह लक्ष्मी देखते ही देखते नष्ट हो जाती है। मन्दराचल के घूमने से बने भंवरो में चक्कर लगाने से मानो उत्पन्न हुए भ्रम-संस्कार वाली आज भी चारों ओर घूमती रहती है। कमलिनियों में घूमने के सम्पर्क से लगे हुए कमलनाल के काटों से घायल हुई मानो कहीं पर भी पूरा पैर जमाकर नहीं रखती है। राजाओं अथवा धनवानों के घरों में बड़े प्रयत्न से रखी गई भी मानों अनेक प्रकार के मदोन्मत्त हाथियों के गण्डस्थल से मदजल के पान करने से मत्त होकर फिसल जाती है। मानो कठोरता को सीखने के लिए तलवार की धाराओं में रहती है। मानो विश्वरूपता को ग्रहण करने के लिए भगवान् विष्णु के शरीर के आश्रय लिए हुए है। जिस प्रकार कमल की शोभा-वृद्धि को प्राप्त जड़-नाल मध्यभाग बाह्य विस्तारवाले भी सायंकालीन कमल को छोड़कर चली जाती है, उसी प्रकार अत्यधिक अविश्वसनीया यह लक्ष्मी पूर्णतः समृद्धि को प्राप्त हुए देश, दण्डव्यवस्था, खजाना तथा सामन्त समूहवाले राजा को भी छोड़कर चली जाती है।

Science Section

Staff Editor

Dr. Shammy Laj

Assistant Professor

Department of Chemistry



Student Editor

Ms. Kirti

B.Sc. 2nd Year (Non-Medical)

Roll No. 1230242081

INDEX

Sr No.	Name of The Article	Name of Writer	Page No.
1.	The Role Of India In Science: A Journey Of Innovation And Impact	Dr. Shammy Laj	39
2.	Success	Chanchal	40
3.	विज्ञान	कीर्ति	41
4.	A Potted Plant	Sakshi Kundu	41
5.	Science and Technology	Yogita	42
5.	Mystery Solved, Wonder Stays	Varsha	43
6.	चुटकले	योगिता	44
7.	Ecotourism In India : Nurturing Nature, Empowering Communities	Prof. Veena Sachdeva	45

Editorial...

THE ROLE OF INDIA IN SCIENCE: A JOURNEY OF INNOVATION AND IMPACT



Dr. Shammy Laj

Assistant Professor

Department of Chemistry

India's journey in the field of science is not just a chronicle of inventions or discoveries—it is a legacy of curiosity, courage, and creativity. At a time when the world doubted the intellectual potential of colonized nations, India produced scientific minds that not only challenged that notion but also laid the foundation for modern scientific thought. Among them, two names shine brightly: Jagadish Chandra Bose and Chandrasekhara Venkata Raman.

Jagadish Chandra Bose was more than a physicist—he was a visionary who blended science with philosophy. Born in 1858, at a time when India was under British rule, Bose pursued science despite limited support and resources. He pioneered work in the field of wireless communication, demonstrating the transmission of radio waves even before Marconi. However, unlike many of his Western contemporaries, Bose refused to patent his inventions, believing that knowledge should be freely shared for the greater good of humanity. But Bose's curiosity didn't stop at physics. He ventured into plant physiology and proved, through his invention the Crescograph, that plants are sensitive to external stimuli and capable of response—an idea that bridged the gap between biology and physics. His interdisciplinary approach and deep respect for nature continue to inspire scientists even today.

In another era, yet equally impactful, C.V. Raman brought global recognition to Indian science. Born in 1888, Raman was passionate about the science of light. While working with simple laboratory equipment and meager funding, he discovered what came to be known as the Raman Effect—the phenomenon of light scattering that earned him the Nobel Prize in Physics in 1930. He was the first Asian and first non-white person to receive a Nobel in any science discipline. What makes Raman's journey remarkable is not just the discovery itself, but the message it carried: that groundbreaking research is possible even in modest conditions if driven by passion and perseverance. His work paved the way for future studies in quantum mechanics, optics, and spectroscopy. Together, Bose and Raman represent more than scientific excellence—they represent the spirit of Indian science: bold, original, and deeply

ethical. They broke barriers, not just of knowledge, but of colonial stereotypes, and put India on the global scientific map long before independence.

Today, as India strides forward in space exploration, biotechnology, and artificial intelligence, the legacy of Bose and Raman reminds us of where it all began. They taught us that science is not limited by geography or resources—it is driven by imagination and inquiry. Let us remember that honoring these pioneers is not just about recalling their achievements—it is about nurturing the values they stood for: scientific temper, dedication, and integrity. In classrooms, laboratories, and communities across the nation, their stories should continue to inspire the next generation of Indian scientists who will shape the future of our planet.

SUCCESS



If you fail, never give up because F.A.I.L.

Means "First Attempt in Learning"

END is not the end. Infact E.N.D.

Means "Effort Never Dies"

If you get No as an answer, Remember N.O.

Means "Next Opportunity"

Don't read success stories,

You will get only message.

Read failure stories,

You will get some

Ideas to get success!!

You cannot change

Your Future,

But you can change

Your habit

And surely your Habit

Will change your future

Chanchal

B.Sc. (Medical) Final Year

Roll No. 1221331030245



विज्ञान



कीर्ति

बी.एससी. (नोन मैडिकल) द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक-1230242081

विज्ञान के वरदान से ही, हम यहाँ तक आए हैं।
बस इसी की बदौलत, आगे हम बढ़ पाए हैं ॥

सिमटा दिया है दूरियों को, घंटों में हमने दिनों की।
एक नहीं पाया है ज्ञान अब, मुट्ठी में केवल गिनो की ॥

विज्ञान ने संभव किया, अब ज्ञान सब ले पाए है।
बस इसी की है बदौलत, आगे हम बढ़ पाए हैं ॥

विज्ञान ने दी तर्क शक्ति, रूढ़ियाँ कम हो रहीं।
रोक ले बढ़ते चरण को, अब किसी में दम नहीं ॥

विज्ञान का लेकर सहारा, देख सच को पाए हैं।
इसी की है बदौलत, आगे हम बढ़ पाए हैं ॥

विज्ञान को वरदान का ही, रूप रखना है हमें।
और मानव के अहित से, बचकर चलना है हमें ॥

विज्ञान है मानव का सहचर, संदेश हम ये लाए हैं।
बस इसी की बदौलत, आगे हम बढ़ पाए हैं ॥



A POTTED PLANT

Sakshi Kundu

B.Sc. (Life Sciences) 1st Year
Roll No. 7988431990

I am a potted plant,
Lying with some trees and small plants.
Some of them are native,
And some were brought from distant lands.
Since I sprouted,
I have been watered too little,
The soil surrounding me has become too hard,
For someone else to grow with me.
Some other plants just like me,
But some are different.
There are some that
Are watered just right,
And those bear flowers,
But I bear spines.
Some plants are watered too much,
Which sometimes makes them rot.
And make it hard for them to hold on,
In the harsh surroundings.
Some plants thrive,
Growing and flourishing fully.
In the outside world,
While others root themselves.
So deeply thrive,
They think this is where they belong.
But spiny plants too bear flowers,
And the most beautiful ones.
I will break the pot,
And flourish fully.

SCIENCE AND TECHNOLOGY



Yogita

B.Sc. (Phy. Hons.) 2nd Year

Roll No. 1230246012

In order to have a strong national economy, science and technology are essential. Gross domestic product growth helps the economy advance technologically. They encourage the development of high tech industries, boost productivity, build capital and promote healthy global competitiveness. There is a real impact of science and technology on the agriculture industry. It goes without saying that their engagement has boosted crop yield. In addition, science and technology are assisting farmers in implementing new methods and equipments to minimize physical labour.

Medical, Education, Economic, Sporting, Employment, Tourism and other fields are examples of science and technology. All of these developments demonstrate how equally important both are to our lives. By directly contrasting the life styles of the ancient world and the modern world, We can observe the differences in our way of life. The high level of scientific and technological development in medicine has made it easier to treat numerous ailments than it was before. It aids in the efficient treatment of different illnesses through medications and operations and aids in the research of diseases like, AIDS, diabetes, Alzheimers, paralysis etc.

Every day, advances in science and technology bring people closer together. In the department of transportation and telecommunication, we observe discernible development. Physical distance is no longer an obstacle. Thanks to the internet and the metro network, every aspect of our lives has received a virtual make over because of them.

"Progress in science is progress for humanity"

"MYSTERY SOLVED, WONDER STAYS"



Varsha

B.Sc. (Non Medical) 2nd Year

Roll No. 1230242127

In twilight labs where shadows play,
Physicists weave secrets night by day.
Equations dance upon the wall,
Unveiling mysteries, standing tall.

Students gather, eyes aglow,
Curiosity sparked, as secrets grow.
They ask and seek, with mindful heart,
Gravity's whisper, a brand new start.

Gravity's warp, spacetime's gentle hue,
Mass and energy entwined, anew.
'Einstein was right!' they exclaim,
As theories proven, wonder remains.

In quantum realms, particles sway,
Probabilities dance, night and day.
Students simulate, Schrodinger's spell,
Uncertainty reigns, their minds compel.

Cosmic inflation, rapid expansion,
Universe born, in endless rotation.
Students model, black holes might,
Gravity's Silence, Sparks Endless Night.

Neutrinos flee, ghostly and bright,
Weak forces whisper, through endless
night.

Students analyze, Symmetries broken,
Phases shift, as physics unspoken.
Mystery solved - yet wonder stays,
As cosmos unfolds, in endless ways.
Students discover, celestial tapestry,
Rich and bold - physics wonder spree.

Through telescopes, they gaze a far,
Starlight whispers, secrets of cosmic scar.
In lab experiments, truth reveals,
Mystery solved - Yet awe forever feels.

Students present, their findings bold,
Science fairs buzz, young minds unfold.
Wonder stays - a constant heart,
Beating strong - as physics never departs.

Into the unknown, they boldly roam,
Where "mystery and wonder -
forever call home".

चुटकले



योगिता

बी.एससी. (भौतिकी ऑनर्स) द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक-1230246012

- मास्टर जी : बच्चों, बताओ पानी का अणुसूत्र क्या होता है ?
बच्चे : पता नहीं।
मास्टर जी : H_2O (बोल कर)
बच्चे : पता नहीं।
मास्टर जी : अब कोई बच्चा ब्लैक बोर्ड पर लिख कर दिखाए।
बच्चों : एक बच्चा उठा और उसने लिखा HIJKLMNO लो जी सर जी
सर जी H to O ...



★★★

एक नए टीचर ने क्लास में पूछा - भारत के एक महान वैज्ञानिक का नाम बताओ...

- स्टूडेंट : सर, आलिया भट्ट
टीचर : छड़ी लेकर ... यही सीखे हो ?
दूसरा स्टूडेंट : ये तोतला है सर ... आर्यभट्ट बोल रहा है।

★★★

न्यूटन, ऐलबर्ट, थोमसन का पंसदीदा गाना ...

- बैठे-बैठे क्या करें,
करना है कुछ काम।
चलो बनाए फार्मूले,
और करें बच्चों का जीना हराम ...।।

★★★

टीचर ने साइन्स लैब में ACID में एक सिक्का डाला और राजू से पूछा ये बताओ कि क्या सिक्का घुल जाएगा ?

- राजू : सर, नहीं घुलेगा।
सर : शाबाश! राजू लेकिन तुम्हें कैसे पता ?
राजू : सर, अगर ACID में डालने से सिक्का घुलता होता तो आप सिक्का हमसे माँगते, अपनी जेब में नहीं लेते।

★★★

ECOTOURISM IN INDIA : NURTURING NATURE, EMPOWERING COMMUNITIES



Prof. Veena Sachdeva

Department of Botany

In an age marked by environmental degradation, loss of biodiversity, and rapid urbanization, ecotourism stands out as a hopeful and responsible approach to travel. It is not merely about exploring beautiful landscapes—it is about preserving ecosystems, respecting local cultures, and empowering communities, especially women.

Ecotourism is defined as “responsible travel to natural areas that conserves the environment, sustains the well-being of the local people, and involves education and interpretation,” ecotourism combines the joy of travel with the ethics of sustainability. It is a conscious effort to leave minimal carbon footprints while maximizing positive social and ecological impact.

India's Natural Tapestry: A Haven for Ecotourism

India, one of the world's 17 mega-biodiverse countries, offers abundant opportunities for ecotourism—from the Himalayas in the north to the Andaman Sea in the south. Tourists can trek through tiger reserves, stay in mud houses in tribal villages, kayak through mangroves, or meditate in forest ashrams. Each eco-destination provides not only scenic beauty but also insight into local ways of living in harmony with nature.

Key Ecotourism Hotspots:

- Sikkim: India's first 100% organic state with eco-villages and biodiversity parks.
- Kerala: Community-led forest stays in Wayanad, nature interpretation centres and boat tours through the backwaters.
- Ladakh: Solar-powered homestays and culturally rich experiences with minimal impact on the fragile ecosystem.
- Kanha, Bandhavgarh (Madhya Pradesh): Responsible wildlife safaris with forest guides from tribal communities.

- Andaman & Nicobar Islands: Marine ecotourism through coral-friendly snorkeling and eco-diving.

The Role of Women in Ecotourism: Green Guardians of Sustainability

One of the most powerful and often underreported aspects of ecotourism is the empowerment of women. Across India, women are increasingly becoming the backbone of eco-initiatives:

- In Uttarakhand and Himachal Pradesh, women manage homestays, act as eco-guides, and craft local souvenirs.
- In Kerala, Kudumbashree groups (women's self-help collectives) run organic cafes, handicraft stalls, and nature walks.
- In the Northeast, women preserve tribal knowledge and lead community-based conservation efforts.
- In Rajasthan, desert women organize camel safaris and folk art performances, keeping heritage alive.

Through ecotourism, women not only gain financial independence, but also social recognition, leadership roles, and a platform to advocate for conservation and sustainability. Many girls from rural areas who were once confined to household roles are now confident entrepreneurs and custodians of their environment.

"When you empower a woman, you empower a community. When you educate a woman about nature, you preserve generations of wisdom."

Ecotourism in Haryana: A Green Horizon Unfolding

While Haryana is often known for its agriculture and industrial growth, its ecotourism potential is now being recognized. The state is home to rich bird habitats, sacred groves, forested Aravalli hills, and cultural landscapes that can be sustainably explored.

Emerging Ecotourism Sites in Haryana:

- Sultanpur National Park (Gurugram): A birdwatcher's paradise, home to over 250 migratory and resident bird species.
- Kalesar Forest (Yamunanagar): Dense sal forests with leopards, elephants, and medicinal plants.

- Morni Hills (Panchkula): The only hill station in Haryana, ideal for trekking, birding, and eco-lodges.
- Aravalli Biodiversity Park (Faridabad/Gurugram): A green lung space that showcases native flora and fauna.

Potential for Women's Involvement in Haryana:

- Rural women can be trained as local guides, wildlife narrators, or eco-hosts.
- Handicraft clusters (like weaving, embroidery, pottery) can be linked with eco-tourist circuits.
- Colleges like Government PG College for Women, Rohtak can promote eco-clubs, nature walks, and student-led awareness campaigns.
- Women self-help groups can sell eco-friendly products like herbal soaps, millet snacks, and recycled paper goods at tourist sites.

By aligning ecotourism with the "Beti Bachao, Beti Padhao" spirit, Haryana can pioneer a model of eco-development led by women.

The Way Forward: Travel That Transforms

As the demand for sustainable travel grows, ecotourism will no longer remain a niche. It will become a necessity—to protect fragile ecosystems, restore balance, and create equitable opportunities.

Youth and students must be at the forefront of this movement. As future educators, administrators, researchers, and leaders, the young women of our college must cultivate a spirit of eco-consciousness. Organizing green treks, biodiversity contests, plantation drives, and local eco-trips can be the first steps.

"Nature doesn't need us. We need nature. And ecotourism is our promise to respect that truth."

Ecotourism is more than a journey—it is a commitment to live harmoniously with the Earth. It invites us to not just see the world, but to heal it. In India—and especially in Haryana—it can open doors not only to greener landscapes but also to gender equality, community resilience, and intergenerational wisdom.

Let us travel gently, speak kindly, and leave behind nothing but footprints of care.

Commerce Section

Staff Editor

Dr. Sonia

Assistant Professor

Department of Commerce



Student Editor

Ms. Gungun

B.Com. (Hons.) Final Year

Roll No. 1221331003107

INDEX

Sr. No.	Name of the Article	Name of Writer	Page
1.	Emotional Intelligence: A Secret of Successful Life	Dr. Sonia	49
2.	Why Students Come To College	Gungun	51
3.	मेरी दुनिया	गुनगुन	51
4.	दहेज - एक बेटी की पीड़ा	हिमांशी दुआ	52
5.	व्यापार की दुनिया	अनमोल	53
6.	एक बेटी	रिशिता	53
7.	Why Schools Must Prepare Us For The Real World?	Sneha	54
8.	The Future Of Accounting : How AI And Automation Are Changing The Game?	Sneha	57
9.	Business Style	Gungun	58
10.	मित्रता और भाव	प्रिया	59
11.	Role Of Artificial Intelligence In Today's World	Sneha	60
12.	क्यों बैठे हो ?	हिमांशी दुआ	61

Editorial ...

EMOTIONAL INTELLIGENCE: A SECRET OF SUCCESSFUL LIFE



Dr. Sonia

Assistant Professor
Department of Commerce

The word "intelligence" generally, refers to cognitive intelligence or academic intelligence. However, there are other types of intelligences also such as social and emotional intelligence. Cognitive intelligence is quantified and measured through Intelligence Quotient (IQ) whereas emotional intelligence is indicated by Emotional Quotient (EQ). In 1998, Daniel Goleman wrote a Book entitled "Emotional Intelligence: Why it can matter more than IQ?" and defined Emotional Intelligence as "Emotional intelligence is the capacity for recognising our own feelings and those of others, for motivating ourselves, and for managing emotions well in ourselves and in our relationships."

If a person has high IQ level, we generally think that he/she is intelligent and definitely will get success in life. But it is not true. Having a high IQ does not automatically indicate a high EQ, while having a high EQ may indicate a high or average IQ at least and predict success at work better than IQ alone. It is because emotional intelligence can be learned. Unlike IQ, which is essentially fixed within narrow parameters at birth and it can predict academic success and may not necessarily lead to success in life, EQ can be developed and enhanced with age & experience and predict success in life. Therefore, IQ can be considered as a minimum requirement or "threshold competence", for example, in getting into an academic institute through an entrance exam or a job in an organization on the basis of degrees and certifications attained. Success thereafter, is determined by many more varied skills that must be built upon this. Emotional competence needs to supplement intellectual competence. Goleman has proposed five emotional competencies such as 'Self-awareness', 'Self-regulation', 'Self-motivation', 'Empathy' and 'Effective relationships' through which one can increase his/her EQ level.

Self-awareness: If you understand your own feelings, you can better understand other's feelings. So, first step towards increasing EQ is to know about myself- what's going inside of me?

Self-regulation: 2nd step is to regulate your emotions. As Aristotle has put it, "Anyone can become angry – that is easy, but to be angry with the right person and to the right degree and at the right time and for the right purpose, and in the right way – that is not within everybody's power and is not easy".

Self-motivation: Identify your 'explanatory style'. When a setback strikes, resist asking "What's wrong with me?" instead, ask "What can I fix?"

Empathy: Empathy means to "Put yourself in someone's shoes". Which indicates towards imagining yourself in the situation or circumstances of another person, so as to understand or empathize with his/her perspective, opinion or point of view.

Effective relationships: Employ all your emotional competencies – awareness, regulation, motivation, and empathy – to Influence and persuade others to build strong and effective relationships.

Thus, it is worth saying 'The people who become the star performers, are the ones who have the strengths in the key emotional intelligence abilities.' Hence, getting aware of the emotions, and knowing proper ways to express emotions are crucial for success in life.



WHY STUDENTS COME TO COLLEGE



मेरी दुनिया

Gungun

Student Editor

B.Com (Hons.) Final Year

Roll No. 1221331003107

Some come to college just for a talk,
Others come to college only for a walk.
Some come to college to meet their friends.
Others come to college to tease their teachers.

Some come to earn name and fame,
Others come only to share the game.
Some come to college to find their mate,
Others come to college for attendance sake.

Some come to college just to lead,
Very few come to college to read.
Some come to college for a strike.
Others come to college for a fight.

Some come to college to explore and grow,
With dreams in their eyes and knowledge to show.

Some come to college to innovate and create,
Building ideas that could change their fate.

Some come to college to prove they are strong,

Fighting for justice when things go wrong.

Some come to college to make memories bright,

Cherishing moments that feel just right.

But a few students come to make their future,
And for the progress of their land and literature.

हर कदम पर जिसने मुझे संभाला है,
बेटी की तरह नहीं परी की तरह मुझे पाला है।
खुलकर जीना जिसने सिखलाया,
गलतियों पर है डाँट लगाया,
कोई और नहीं मेरे पिता हैं वो,
जिसने मेरा जीवन संभाला है।।

चोट लग जाए मुझे तो रो देती है वो,
मेरे लिए सब सपनों को खो देती है वो।
माँ मुझे हर पल मुस्कुराना सिखाती है,
क्योंकि मेरे सारे गमों को ढो लेती है वो॥

याद है मुझे जब मेरी तबियत नासाज़ (खराब) थी,
जब वो भगवान का नाम ही मेरी माँ की साँस थी।
हाँ दर्द तो हुआ था मेरे तन को पर मन मुस्कुरा रहा था,
क्योंकि मेरी माँ मेरे पास थी, मेरी माँ मेरे पास थी॥

आज का ही वो दिन था जब इस घर में खुशियाँ आई थीं,
जब भगवान जी ने आप दोनों की जोड़ी बनाई थी।
कोई कहे की घर में बहु आएगी लक्ष्मी बनकर,
मेरे लिए तो मेरी सारी दुनिया आई थी, मेरी माँ आई थी॥

दहेज : एक बेटी की पीड़ा



हिमांशी दुआ

बी.कॉम ऑनर्स (तृतीय वर्ष)

अनुक्रमांक-1221331076003



तुम माँगते हो दहेज
उससे,
जिसने तुम्हें अपनी जान दे दी।
अरे! तुम क्या जानो एक पिता ने,
तुम्हें अपनी पहचान दे दी।

तुम्हारी टी.वी., फ्रिज, वाशिंग मशीन आदि के चक्कर में,
एक बाप ने अपना घर ही गिरवी रखा है।
और तुम मुझसे पूछते हो,
तेरे बाप ने आखिर दिया ही क्या है?

विवाह से लेकर आज तक सिर्फ माँगे ही गिनवाई है,
क्या कभी पूछा मुझसे, कोई तकलीफ़ तो नहीं आई है?

अरे-अरे! पूछोगे भी कैसे अभिमान न चूर हो जाएगा,
आज मेरा परिवार कितना रोएगा, जब मेरा जला देह पाएगा।

माफ़ करना, माँ-बाबू मेरी खुशियों को पूरा करने को, तुमको यह सजा मिली है,
आज मैं खुश हूँ जो साल बाद मैंने चैन की साँस ली है।

तुम कहते हो दहेज क्या है?
यह तो वर-पक्ष का हक़ है।
इसकी कीमत उस पिता से पूछो,
जिसने अपनी ज़मीन ही नहीं
खो दी अपनी 'लाडली' भी।

एक बेटी



रिशिता

बी.कॉम. (ऑनर्स) तृतीय

अनुक्रमांक- 1221331003153

व्यापार की दुनिया

अनमोल

बी.कॉम. (ऑनर्स) तृतीय

अनुक्रमांक-52

वो फूल-सी कोमल बच्ची जब जन्मी थी,
हर कोई खिलाफ था उसके,
बस हक में उसकी अम्मी थी।
अक्सर वो अंजान थी घर की चार दिवारी में पली थी,
बचपन में ही उसे समाज के कायदे-कानून सीखा दिए गए
वो लड़की थी।
उसे जैसे ढाला गया को वैसे ढली थी,
वो पूछा करती अम्मी से...
जब मैं पैदा हुई तब कौन सी घड़ी थी।
ना दिया जवाब अम्मी ने,
अम्मी की तो आँखें भरी थी,
हुई जो बड़ी तो छोड़ दिया सबके लिए जीना,
वो लड़की थी।
क्या करती
समाज के उसूलों से घिरी थी,
हँसते-रोते बेटी ने सब कुबूल किया,
जाते-जाते बेटी ने एक सवाल पूछ लिया...
मैं पैदा हुई
क्या मैंने ये जुर्म किया।

सौदे - बाजी, मोल - भाव
सपनों का चलता है व्यापार।
चतुराई, समझदारी संग,
चलता आगे कारोबार।।

मुनाफे की चाहत सबको,
हर सौदे में लाभ खोज।
पर सच्चाई, ईमानदारी,
ये भी व्यापार सिखाए रोज।।

मेहनत की जोत से जलती,
संघर्षों की लौ निराली।
धैर्य रखो, बढ़ते जाओ,
यही है व्यापार की कहानी।।

रिश्तो का भी मूल्य समझो,
सिर्फ धन ही सब कुछ नहीं।
ईमानदारी से जो कमाया,
वही असली सुख सजीव।।



WHY SCHOOLS MUST PREPARE US FOR THE REAL WORLD



Sneha

B.Com. (Hons.) 6th Sem

Roll No. 1221331076004

Imagine graduating with honours, stepping into adulthood, and realizing you have no idea how to file taxes, budget your salary, or understand basic investments. Unfortunately, this is the reality for millions of students worldwide, including me.

"An investment in knowledge pays the best interest." - Benjamin Franklin

Education is often seen as the foundation of success, yet millions of students graduate without understanding one of the most critical aspects of adult life i.e. personal finance. We are taught advanced mathematics, literature and history. but how many students leave school knowing how to manage debt, file taxes or invest wisely?

Even Albert Einstein once referred to compound interest as the eighth wonder of the world, yet schools fail to teach even the basics of saving and investing. The practical aspect of financing is far from visible in our education system. This gap in education leaves young adults financially unprepared, often leading to poor money management, unnecessary debt, and financial stress.

As a Bachelor of Commerce (Honors) student, I have spent years studying complex financial theories, Yet I had to teach myself how to manage my own small business finances. Schools equip us with knowledge about algebra, history and literature, but what about real life financial skills that directly impact our futures?

A Financially Unprepared Generation

The financial world is becoming more complex, yet schools continue to ignore financial literacy. Studies show that young adults struggle with debt, credit scores and budgeting because they were never taught these skills. While we can memorize economic models, most of us are left to deal with loan, taxes and investments without guidance.

The reality is that financially informed individuals make smarter career and life decisions. Yet, studies show that over 60% of adults lack basic financial knowledge, leading to poor money management, excessive debt, and missed opportunities. Did you know that 40% of millennials have no retirement savings at all?

The lack of financial education limits both personal and professional growth. Employers value professionals who can think critically about money, assess risks, and make data-driven decisions, all of which stem from financial literacy.

Why Financial Literacy Matters - No Matter Your Career Path

"Formal education will make you a living : self-education will make you a fortune." - Jum Rohn

Many assume finance is only relevant for accountants and investors, but that couldn't be further from the truth. Understanding how money works impacts everyone, whether you're, a job seeker with a salary, an entrepreneur building a business, a professional planning for the future.

Many of today's financial struggles could be avoided if students were educated in financial literacy from an early age. Personal Finance with a practical aspect should be a core subject in Schools or colleges as it :

1. Reduces Financial Stress - Many adults struggle with debt, often due to poor financial decisions made in their early years. Teaching financial literacy can prevent this.
2. Empowers Future Entrepreneurs - I started my own small business, but without financial knowledge, many hesitate to take that step. Understanding money fosters confidence in taking financial risks.
3. Prepares for Tax Responsibilities - I've seen friends panic when they receive their first tax forms Taxes affect everyone, yet we are never formally taught about them.
4. Bridges the Wealth Gap - Many people, especially from underprivileged backgrounds, don't grow up learning about savings, investments, or credit. Schools should provide equal financial education to all students.

How I Discovered the Power of Financial Literacy

Though I never formally studied finance beyond my coursework, I started realizing its importance in unexpected ways. Everyone spend money and earn money and in this process who knows how to manage that money is at much more better place than the one who don't know how to manage the money. Recording, Classifying & Managing the transactions is accounting, that is what we all do every day. You must have seen your parents calculating how much they spend the money on different things every month, that is what you'll face one day as well and even bigger if you cam bigger Understanding why budgeting & accounting matters, I saw how financial awareness shapes real-world decision-making.

Three Financial Lessons Every Young Professional Should Learn :

- 1) Understand how taxes work-A paycheck isn't just your salary, deductions, benefits, and tax brackets matter. Knowing this can prevent costly mistakes.
- 2) Learn to manage debt early-Credit cards, student loans, and interest rates can either build wealth or trap you in financial stress. The difference? Financial literacy.
- 3) Invest in your future-Even small investments in skills, courses, and financial planning pay huge dividends over time.

Implementing Personal Finance Education

Schools should prioritize financial literacy but it doesn't mean starting a subject only. What I mean by financial literacy is students must learn it practically. By the end of their school or college, they should be capable enough to manage their own finance and think of money management in different ways.

This will not only help students shape their future but also help this world in a broader sense. It will reduce poverty, bring up a fresh look to the world. And most importantly, financial literacy will nurture the younger generation in a right direction.

Final Thoughts

"Do not save what is left after spending, but spend what is left after saving". Warren Buffett

As someone pursuing a career in accounting, I strongly believe financial literacy is a basic life skill that everyone, not just finance professionals should have. If we want to set future generations up for success, we must push for schools to teach financial literacy. Because what's the point of earning money if we're never taught how to manage it?



THE FUTURE OF ACCOUNTING : HOW AI AND AUTOMATION ARE CHANGING THE GAME



Sneha

B.Com. (Hons.) 6th Sem

Roll No. 1221331076004

The secret of change is to focus all of your energy not on fighting the old, but on building the new. This quote by Socrates shows a strong connection in the accounting industry, which is undergoing a radical transformation driven by Artificial Intelligence (AI) and automation. As a future member of this community, I find myself pondering a critical question. Will AI replace accountants, or will it redefine their role?

Accounting has always adapted to technological advancements, from manual bookkeeping to spreadsheets, and now AI-powered software. The field is evolving at an unprecedented pace, with AI performing tasks that once required human expertise. AI-driven tools like

Quick Books and Xero minimize human errors and process vast amounts of financial data in seconds. Machine learning algorithms can analyze transactions, detect flag suspicious activities faster than humans ever could. AI can also assess regulations, suggest tax-saving strategies, and predict financial trends with high accuracy.

The fear that AI will replace accountants is valid but incomplete. AI is automating repetitive tasks, not eliminating the need for financial expertise. Routine book keeping and data reconciliation are being automated, but strategic financial decision-making still requires human expertise. The role of accountants is shifting from number crunching to value-driven financial advising. Instead of spending hours on manual calculations, professionals will interpret financial insights, guide businesses, and provide critical decision-making support.

For those entering the field, the key takeaway is clear. Technical accounting skills alone are no longer enough. The accountants of the future need analytical thinking, technology proficiency, and advisory skills. They must be able to interpret AI-generated insights, make strategic decisions, and provide actionable financial guidance to businesses.

Understanding this shift, I've focused on gaining skills that go beyond traditional accounting. I'm exploring AI-driven accounting tools, developing data analysis skills, and strengthening my financial advisory knowledge rather than fearing automation, embracing it is the only way forward.

Accounting isn't dying-it's evolving. AI and automation are not replacing accountants, they're making them more valuable. Future CAs or anyone in this field who adapt to technology will not just survive but thrive. The question is. Are we prepared to evolve with it?

BUSINESS STYLE



Gungun

B.Com (Hons.) Final Year

Roll No. 1221331003107

Business चलाया तो Accounts बनाया,
बनाते-बनाते मेरा सिर चकराया।
जब Tax की थी भारी,
तो Liability थी भारी।

जब Issue करने थे Share,
तो Profit था Fair.
जब यार बने Debenture holder तो टूटी यारी,
Business हमारा, Income उनकी सारी।

जब देनी थी Salary खाली थी Gallery,
जब करना था Product Advertise,
तो Money आया Wow! What a surprise!

अब जब भी Business चलाओ,
तो दिमाग दौड़ाओ,
वरना जाकर घर बैठ जाओ।

जब Market में Competition आया,
Profit Graph अचानक गिराया।
Branding की जब की कोशिश,
तो Customer ने दिया Response थोड़ा Slowish.

Market ने फिर नया Trend दिखाया,
Social Media Ads से Profit बढ़ाया।
जब Franchise का खेल समझ आया,
तो Business ने नया मुकाम पाया।

अब Strategy सही बनानी है,
Risk और Profit की Calculation मिलानी है।
अगर Success की ओर बढ़ना है,
तो हर Challenge को Accept करना है।

मित्रता और भाव



प्रिया

बी.कॉम. छठा सेमेस्टर

अनुक्रमांक-1221331003177

मित्र होता क्या है ?

मित्र होता है ऐसा इंसान जिसके साथ आपका अंतर्मान जुड़ा होता है। वह इंसान आपका अपना साथी, सहायक, समर्थक और शुभचिंतक है। एक सबसे अच्छा दोस्त एक प्यारा साथी होता है, एक अंतरंग जो किसी की आत्माओं की जटिलताओं को समझता है। यह गहरा संबंध साझा हितों से परे है, यह विश्वास, वफादारी और बिना शर्त समर्थन पर बना एक बंधन है। एक अच्छा दोस्त आपकी उपलब्धियों का जश्न आपसे भी अधिक मनाता है और आपकी कठिनाईयों में ढाल बनकर आपके साथ खड़ा रहता है। दोस्ती वह रिश्ता है जो समय या दूरी के माध्यम से भूला नहीं जा सकता। यह एक ऐसा मीठा आभास है जो आपके दिलों की गहराइयों में छुपा होता है और आपके जीवन को स्वर्ग बनाने में सहायक होता है।

जब हम विद्यालय जीवन को पूर्ण करके कॉलेज आते हैं तो बहुत से ऐसे बच्चे होते हैं जिन्हें नए लोगों से मेलजोल करने में बड़ी दिक्कतें होती हैं। वे आसानी से सबसे बोल नहीं पाते, उनके लिए नए वातावरण में घुलना-मिलना मुश्किल होता है। इसके लिए आप कुछ चीजें काम कर सकते हैं।

- ★ कॉलेज क्लब जाइन करना।
- ★ कॉलेज इन्वेट में जाना/हिस्सा लेना।
- ★ सोशल मिडिया का सहारा लेना।
- ★ दोस्तों के माध्यम से दोस्त बनाना।
- ★ अपना व्यवहार सहज व विनम्र बनाना।
- ★ स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, लाइब्रेरी, कैंटीन आदि में जाना।

और आपको यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि यह आपकी तरह औरों का भी पहला दिन होगा। चुपचाप रहने की बजाय सभी से खुलकर बात करें। मित्रता के नियम नहीं होते। मित्र चाहे गलत हों सबके सामने उसका साथ दें, और बाद में समझाएँ।

दोस्त बनाने से पहले उन्हें परखें, कहीं वे उनके हित के लिए तो आपके साथ नहीं हैं। किंतु दोस्ती में परख नहीं होती।

आप भीड़ जोड़ने की अपेक्षा कम लेकिन अच्छे व सच्चे मित्र बनाएँ। क्योंकि “जैसी संगत, वैसी रंगत” इसलिए किसी के सखा-सखी बन जाओ और किसी को बना लो। कठिनाई में भी आपको सुकून व साथ मिलेगा।

ROLE OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE IN TODAY'S WORLD



Sneha

BBA. Final Year

Roll No. 1221331010056

Artificial Intelligence (AI) is a rapidly evolving field that aims to create machines capable of performing tasks machines capable of performing tasks that typically require human intelligence, such as learning, reasoning and problem solving. AI has potential to revolution various industries and aspects of our lives.

John Mccarthy is widely recognized as the "Father of Artificial Intelligence." He coined the term "Artificial Intelligence" in 1956 during the dartmouth conference, which is considered the founding event of AI as a field. Mccarthy also created the lisp programming language, which was crucial for early AI research.

- AI encompasses a broad range of technologies that enable computers to learn from data, make predictions and automate tasks.
- It is used in diverse field like healthcare (diagnosis and treatment) transportation (autonomous vehicle) and education (personalized learning).
- AI can improve efficiency, accuracy and speed in various processes.
- AI is expected to play an increasingly significant role in our lives, creating new job opportunities.

AI is powerful technology with the potential to transform our world in positive and negative ways, while AI offers numerous opportunities for progress and innovation, it is crucial to address the ethical challenges and ensure that its development is responsible and beneficial for society as a whole.

क्यों बैठे हो?



हिमांशी दुआ

बी.कॉम (ऑनर्स) तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक-1221331076003

क्यों बैठे हो उदास ?
भूल के सारी यूं आस,
बंद कमरे मे, क्यों गुमसुम से बैठे हो ?

फिर हो गई है हार,
या भूल गया कोई यार,
किस परेशानी में विरान हुए बैठे हो ?

हुआ नहीं क्या अनुकूल,
इसलिए हो व्याकुल,
ऐसा क्या हुआ कि तुम चित्त हुए बैठे हो ?

क्या बताऊँ तुम्हें भाई,
जब चला, मात खाई,
हार और तकरार का भार लिए बैठा हूँ।

एक आशा के पीछे,
सौ निराशाएँ हैं
कहाँ जाऊँ, कैसे जीऊँ,
कितना मैं सहता हूँ।

अच्छ तो ये है बात,
याद कर बाल-काल,
गिर-गिर के तू ही था,
जो उठता था बार-बार।

आपे-आपे बोल के,
चलना भी तो सीखा था।
ममा-ममा बोल के,
बोलना भी तो सीखा था।

अरे, कहना तो है आसान,
पर करना नहीं इतना,
फिर छोड़ बैठा रह कोसता तू किस्मत को,
और फिर भी क्या पा लेगा
सोच के बैठे हो या यूँ ही दिल पर बोझ लिए बैठे हो।

जिंदगी तपा रही,
तो तप के निखरना होगा,
अग्निपरीक्षा-सा ज़हर भी पीना होगा।

गलतियों को तू सुधार,
खुद को ज़रा निखार,
अपने कल को आज से ही सवार।

याद रख अगर दुःख का बोझ नहीं सहना है,
तो आज से निराश नहीं रहना है।

कर्म तुझे करना होगा,
आगे तुझे बढ़ना होगा,
बादलों को चीर के, सूर्य को निकलना होगा।



Maths Section

Editor

Dr. Kusum

Assistant Prof.

Department of Mathematics



Student Editor

Ms. Kirti

B.Sc. 2nd Year (Non-Medical)

Roll No. 1230242081

INDEX

Sr No.	Name of the Article	Name of Writer	Page
1.	Embracing Mathematics For A Brighter Future	Dr. Kusum	63
2.	Maths : Life A Sinusoidal Wave	Kirti	64
3.	Did You Know?	Shivani	64
4.	Mathematics of Life	Annu	65
5.	दो का पहाड़ा	रितिका	66
6.	गणित को गले लगाना है...	रितिका	66
7.	गणित न होता ...	रितिका	66
8.	Maths : Riddles	Shivani	67
9.	Paradoxes	Shivani	67
10.	Jokes	Versha	68
11.	Quotes	Versha	68
12.	Maths	Versha	68
13.	Mathematics	Manju	69
14.	Mathematics Love	Manju	69
15.	Math of Life	Manju	69
16.	Facts About Maths...	Manju	69
17.	Maths Raddles	Manju	70
18.	Math if Like Life	Versha	70

Editorial...

EMBRACING MATHEMATICS FOR A BRIGHTER FUTURE



Dr. Kusum

Assistant Professor

Department of Mathematics

Mathematics is much more than numbers and formulas — it is a way of thinking that unlocks countless possibilities. From the patterns in nature to the cutting-edge technology that drives our modern world, mathematics is at the heart of it all, helping us make sense of complexity with clarity and precision.

For students, mathematics is not merely an academic subject but a lifelong companion that trains the mind to think logically, solve problems creatively, and approach challenges with confidence. Every equation solved, every concept mastered, builds a foundation for success in both academics and life beyond the classroom.

A college magazine serves as a wonderful platform to ignite curiosity and share the joy of learning. I encourage our students to use this space to explore the beauty of mathematics — through engaging puzzles, insightful articles, and real-world applications that reveal how fascinating and useful this subject truly is.

In our rapidly changing world, mathematical literacy has never been more vital. It empowers us to interpret data, make informed decisions, and adapt to technological advancements. I urge all students to embrace mathematics wholeheartedly, ask questions boldly, and never shy away from challenges — for it is through solving problems that true growth happens.

Remember, behind every tough problem lies an elegant solution waiting to be discovered. Keep learning, keep practicing, and let your curiosity guide you to new heights. May mathematics be your tool for clear thinking, wise reasoning, and endless opportunities.

Wishing you all great success and a fulfilling academic journey ahead.

MATHS : LIFE A SINUSOIDAL WAVE



Kirti

B.Sc. (NM) 2nd Year
Roll No. 1230242081

Life is never a waste,
it has functions on its ways.
It goes through test,
like a line that pass through vertical line
test.
it has problems,
just know the right formula and
you will solve them.
Life can be positive
but it can also be negative,
It can transform
like translations that can be a reflection.
It can be amusing,
like finding domain and range but
quite confusing.
Life seems to be difficult
like this maths that I am bad at.
but the answers are simple
that you will end up
Laughing at.
All you need a good mentor
that's all you need to conquer.

DID YOU KNOW?

Shivani

B.Sc. (NM) 2nd Year
Roll No. 1230242059

- Zero is the only number that cannot be represented by roman numerals.
- The word 'hundred' comes from the old Norse term, 'hundrath', which means 120 and not 100
- 2,520 is the smallest number that can be exactly divided by all the numbers from 1 to 10.
- If you spell out numbers from one, you would not find the letter 'A' until you reach 'one Thousand'
- Four is the only number in English language that is spelt with the same number as the number itself.
- On dice, opposite sides always add up to the number seven.
- If you started with a penny and doubled its value everyday for just 30 days, you would have over \$ 5,000,000 million in the first month.
- William shanks, a renowned Mathematician, spent a large part of his life calculating Mathematical constants and did not make a mistake until he reached 528th digit.
- The shape of sunflower follows the Fibonacci sequence, where each number is sum of two preceding numbers.
- Number 1 is believed to be a magic number. It is because if you multiply a number with 1, all digits to resulting number, the sum would always comes out to be 1.

MATHEMATICS OF LIFE



Annu

M.Sc. (Maths) 1st Year

Roll No. 2244165012

जिंदगी एक गणित है, इसे जीना पड़ता है।
कभी कुछ जोड़ना, तो कभी कुछ घटाना पड़ता है।
कभी गुणा तो कभी भाग करना पड़ता है।
जिंदगी में कई समस्याओं को हल करना पड़ता है।
मगर जीवन का शेष, अंत में शून्य ही आता है।

अक्कड़ - बक्कड़ बम्बे बो 80, 90 पूरे 100 गुनगुनाते रहो,
खुशियों के कदम तुम ∞ बढ़ाते रहो।
ना तुम $<$ ना मैं $>$, तकरार कभी न हो हमारे बीच,
क्योंकि हम दोनों है $=$

सुनो यूँ तो मैं सुलझा लेती हूँ Matrix भी,
पर कभी-कभी वृत्त से घिर जाती हूँ,
और कभी जिंदगी के इस गणित से डर जाती हूँ।
कहते हैं कि जो डर गया वो मर गया
और मरने का शौक हम नहीं रखते,
माना जिंदगी जीना आसान नहीं होता,
लेकिन बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता।

ये जिंदगी एक Maths की equation है,
ज्यादा से ज्यादा Profit पाने के लिए
आपको यह जानना जरूरी है कि $-ve$ को $+ve$
में कैसे बदला जाए।

$$\text{Life} + \text{Love} = \text{Happy}$$

$$\text{Life} - \text{Love} = \text{Sad}$$

$$2 \text{ life} = \text{Happy} + \text{Sad}$$

$$\text{life} = \frac{\text{Happy} + \text{Sad}}{2}$$

$$\text{life} = \frac{1}{2} \text{Happy} + \frac{1}{2} \text{Sad}$$

That's life enjoy it.

मानो हमको 90° का Angle, हमसे करो न कभी Fight,
because angle of 90° is always right.

दो का पहाड़ा



दो भाई थे नामी चोर,
चार बराबर उनका जोर।
छः किलो खाते अंगूर,
आठ पहर अहम् में चूर।
दस गाँव में थे बदमाश,
बारह थानों में उनका नाम।
चौदह ऐसे सिपाही आए,
सोलह उनको बेंत लगाए।
अठारह साल बाद गए वो जेल,
बीस साल की होगी जेल॥

गणित न होता...

गणित न होता, तो हम होते दुनिया से अनजान।
गणित लगाकर घर बनते हैं, बनते हैं परिधान।
गणित लगाकर खेती होती है, फिर बनते पकवान।
गणित न होता, तो हम होते दुनिया से अनजान।
गणित लगाकर बनी है साइकिल, बनते हैं विमान।
गणित लगाकर बनी है भौतिकी, और बने रसायन।
गणित न होता, तो हम होते दुनिया से अनजान।
गणित लगाकर रॉकेट चलते, होते युद्ध निदान।
गणित लगाकर देशों की सीमा बनती, रक्षा करते वीर जवान।
गणित न होता, तो हम होते दुनिया से अनजान।
गणित लगाकर दवा भी बनती, होता है ऑपरेशन का ज्ञान।
गणित न होता, तो हम होते दुनिया से अनजान॥

गणित को गले लगाना है...

रितिका

एम.एससी. (गणित) प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक 2244165023

ठान लो कुछ कर दिखाना है,
जीवन में सफलता पाना है।
अपनी राह स्वयं बनाना है तो
गणित को गले लगाना है॥
जिदंगी के सवालों को देखकर
ना तुम्हें घबराना है।
जोड़-घटा-गुणा-भाग कर
उनको सरल बनाना है तो
गणित को गले लगाना है...
चाँद से लेकर सितारों तक
धरती से लेकर तारों तक
सूर्य से लेकर ब्रह्माण्ड तक
नदियों से लेकर सागर तक
सबका हिसाब लगाना है तो
गणित को गले लगाना है...
चलती नहीं जिदंगी कभी समानांतर
लाभ-हानि तो होना है
सम-विषम को समझना है।
साधारण ब्याज को अगर बढ़ाना है तो
गणित को गले लगाना है।
ठान लो कुछ कर दिखाना है,
जीवन में सफलता पाना है
अपनी राह स्वयं बनाना है तो
गणित को गले लगाना है॥

MATHS : RIDDLES



Shivani

B.Sc. (NM) 2nd Year

Roll No. 1230242059

- **Family with sons and sisters**

Q. A family has five sons and each son has a sister. How many children are there in the family?

Ans. Six children

- **Time Riddle**

Q. How can $6 + 7 = 1$?

Ans. 6 AM + 7 Hours = 1PM

- **Age Riddle**

Q. When David was eight, his brother Alex was half his age. David is now 30. How old is Alex?

Ans. Alex is 26.

- **Banana Riddle**

Q. Three monkeys share a bunch of bananas. The first monkey takes three bananas; the second takes half of the remaining bananas, and the third takes the last banana. How many bananas were in the bunch.

Ans. Five Bananas

- **Farms Riddle**

Q. There are 18 legs and 7 heads on a farms with ducks and cows. How many ducks & cow are there?

Ans. Five ducks and two cows.

PARADOXES

- **Hilbert's Hotel Paradox**

A fully occupied hotel with an infinite number of rooms can still accommodate more guests.

This is because, infinity is "Stretchable" and "Squashable".

- **Allais Paradox**

The idea that you can predict a function's value by knowing all its previous values.

- **Dichotomy Paradox**

Zeno of Elea first formulated this paradox, which show that things can get weird when they get small.

- **Hilbert - Bernays paradox**

If there was a name for a natural number that is identical to a name of its successor, then there would be a natural number equal to its successor.

- **Barber's paradox**

A barber shaves all men who don't shave themselves, but who shaves barber.

- **Grand's Series**

The sum of series $1-1+1-1+1-1+1-.....$ can be either one, zero or one-half.

JOKES



Versha

B.Sc. (NM) 1st Year

Roll No. 1242907085

1. The vector was walking down Cartesian drive when he bumped into a confused scaler. The vector asked him what was wrong, and he replied, "Help, I have no directions".
2. Q : why do sets only have one medians?
A : Because if there two, they would be called co-medians.
3. I hired a handy man and gave him a list of things to do.
When I got home, only numbers 1,3 and 5 were done.
Turns out, he only does odd jobs.
4. Q : Why should you wear glasses during maths class?
A : It improves divisions
5. Q : Did yon know that $10+10$ and $11+11$ are same?
A : $10+10 =$ twenty and $11+11 =$ twentytoo.
6. Q : Which triangle are coldest?
A : Ice-sosceles triangles
7. Q : Why did the student get upset when her teacher called her savage?
A : Because it was a 'mean' thing to say
8. Q : What is the value of a pizza with radius z and thickness a ?
A : Pizza [or Pi-zza]

QUOTES

1. Maths not teach us how to.
Add low or minus hate.
But it gives us every Reason to
hope that every Problem has a sol.
2. Maths tells us three of saddest low stories.
 - (i) Tangent lines that had one chance to meet then Parted forever.
 - (ii) Parallel lines that will never meant to meet.
 - (iii) Asymptotes lines who can get closer but its will never be together.

MATHS

We are the sum of everything and everyone we've ever known and ever will become.

We are subtracted from air, landscapes, ideas of swirling integers - the plus of minus.

We sub-divide to quotients of emotion, love, the arithmetic of skin and motive, proving that we live.

We multiply to one last courage, one last fear from calculus and algebras of heretofore to there.

We are the trig of arcs and angles, slides and planes, worldwide and personal, that walk us upright where we've lain.

Backwards, forwards, sideways, whatever the amount we deduce from laocoonic post of instruct, we count.

MATHEMATICS



Mathematics is one of the essential emanations of the human spirit ; a thing to be valued in and for itself like art of Poetry.

Maths is not a subject only about numbers and figures, and it is also about taking the time to understand & solve it accordingly...

Mathematics will teach you to solve problems that don't have an easy way of reaching the solution. Maths will help you glow patience.

MATHEMATICS LOVE

Dear Love,

I may not be good with words because my English is not fluent, but what I feel deep inside my Heart

Persuades me to express myself mathematically. Every time I see U,

U simultaneously divide my life into two equation, because my feeling for you cross,

Multiply on a daily basis,

You inspire me to be greater than zero.

I really like, add & multiplications sign in mathematics, because they resembles and relate with real life, in a way that, that all people on earth should be add & multiply all goods things with passing of time.

MATH OF LIFE...

Manju

B.Sc. (NM) 2nd Year

Roll No. 1230242184

Fraction of love

Section of bow

Graphs & Charts of everlasting love.

Formulas of life

Euation of style

each page of mine bound with some kind...

Decimals of wrath

Sequence of brats

Abacus will bring the

Calculation of Smile..

Surds of lie

Digits of cry

At last all will be a

junkyard of time...

FACTS ABOUT MATHS...

- Letters 'A', 'B', 'C', 'D' don't appear in the spelling of 1 to 99...
- It you were to spell out numbers from one; you will not find letter A until you reach one thousands...
- Every odd number contains an 'E', when written in English...
- Forty is the only number which has Letters arranged in the alphabetical order.

MATHS RADDLES



Manju

B.Sc. (NM) 2nd Year
Roll No. 1230242184

Why should you never mention the number
288 intriend any one?
Because 288 is too Grass
How many eggs can you put in any empty
bucket?
Only one egg because after that the basket
doesn't empty.
How many 9s are there between 1 and 100?
Twenty 9s

An ode to maths

I never undersood, how so few number can
morph into so many. How can one equation
be solved in so many ways. It's funny. It only
real life problems were so indifferent But
solve this
If you + Me = us
if anxiety + Depression > me
What is ie++
Nothing
Nothing remains because they have
drained me dry. May be then we will stop
keep, change, flipping my life upside down.
So here is an ode to Math.

MATHS IS LIKE LIFE



Varsha

B.Sc. (NM) 2nd Year
Roll No. 1230242127

Maths mirror's life in every way,
Twists and turns marks each new day.
Numbers unfold like chapters told,
Each problem solved, a story to hold.
Life's patterns echo maths designs,
Cycles repeat, like heartbeats and lines.
Geometry shapes life's everyday sight,
Angles and curves in morning light.
Algebra codes life's hidden plans,
Variables unknown, like tomorrow's hands.
Solutions await, like down's early rise,
Constant change in maths surprise.
Maths messures life's joy and deepest fears,
Quantifying emotions through all the years.
Like life, maths has its highs and lows,
solving problems brings joyful glows.
Percentages rate life's successes high,
Fractions messures love that touches the sky.
Decimals point to life's precise delight,
Maths reflects life in morning's first light.
In life's journey, maths is a guiding star,
Illuminating paths near and far.
Both require heart, mind and soul,
Solving life's puzzles, maths makes us whole.
Maths is like life - a beautiful test,
Full of surprises and endless least.
Embracing both, heart and mind align,
Maths and life merged - a harmonious rhyme.

Women Cell

Staff Editor

Prof. Veena Sachdeva

Department of Botany



Student Editor

Ms. Anju Goyat

B.Com. (Hons.) Final Year

Roll No. 1221331003107

INDEX

Sr. No.	Name of the Article	Name of Writer	Page
1.	Editorial...	Prof. Veena Sachdeva	72
2.	International Women's Day 2025 : For ALL Women and Girls – Rights, Equality, Empowerment	Prof. Veena Sachdeva	74
3.	She is	Anju Goyat	76
4.	नारी हूँ मैं	अंजु गोयत	76
5.	Sunita Williams : A Star Beyond The Sky	Shruti	77
6.	Women Empowerment	Deesha	78
7.	Jokes	Sakshi	78
8.	Forever Grateful	Yukta	79
9.	Endless Sunshine	Priyanka	79
10.	नारी की फरियाद	हिमांशी दुआ	80
11.	भारत में महिला सशक्तिकरण में एआई की भूमिका	डॉ. राधा राठी	81

EDITORIAL... EMPOWERED TODAY, HEALTHIER TOMORROW



Prof. Veena Sachdeva

Department of Botany

Editor, Women Cell Section

With great pride, we present to you this edition of Vandana, the annual magazine of Government Postgraduate College for Women, Rohtak—a reflection of our students' voices, faculty insights, and collective vision for a brighter, more equitable future. This year, as we turn our editorial focus to women's health and women's education, we reaffirm our commitment to nurturing minds and safeguarding well-being—two indispensable pillars of true empowerment.

Women's Health: A Priority, Not a Privilege

Health is the foundation of every woman's ability to thrive, lead, and nurture. Yet, in many families and communities, women's health remains a neglected domain. From nutrition and mental health to reproductive care and lifestyle diseases, women face unique challenges that need urgent and sustained attention. At our college, we strive to create awareness through workshops, health camps, and interactive sessions, ensuring our students learn not only the value of physical fitness but also the importance of emotional and mental well-being. A healthy woman empowers not just herself but generations to come.

Women's Education: Lighting the Path Ahead

Education continues to be the most powerful tool for change. It enables women to dream, decide, and define their own lives. At Government PG College for Women, Rohtak, we take immense pride in fostering academic excellence, encouraging critical thinking, and promoting leadership among our students. In a society still battling gender biases and outdated norms, an educated woman becomes a beacon of hope and transformation. Education equips her with the courage to question injustice, the skills to earn independently, and the wisdom to guide others.

Celebrating International Women's Day 2025

The theme for International Women's Day 2025—"For ALL Women and Girls: Rights, Equality, Empowerment"—resonates deeply with our mission as an institution. It is a clarion call to ensure that every woman, regardless of her background, socio-economic status, or geographical location, has access to equal opportunities and fundamental rights. It reminds us to be inclusive in our approach, to lift each other up, and to create a world where every girl feels safe to dream and strong enough to realize it. At our college, this theme is not just a slogan—it is a promise we strive to fulfil through every classroom, seminar, and shared success.

Inspiring Words, Enduring Strength

As Michelle Obama once said, "There is no limit to what we, as women, can accomplish." These empowering words echo in the hearts of our students who are being prepared not only for careers but for courageous, purposeful lives.

“नारी शक्ति का अर्थ केवल शक्ति नहीं, यह सृजन, समर्पण और संकल्प का प्रतीक है।”

Woman power means not just strength, but a symbol of creation, dedication, and determination.

A Call to Action

As you turn the pages of this edition of Vandana, may you find inspiration in the voices of young women who are determined to shape a better world. Let us all, as educators, parents, students, and citizens, commit ourselves to building a society where no woman is denied education, and no woman compromises her health.

Together, let us celebrate the journey of womanhood—with dignity, strength, and unwavering hope.



INTERNATIONAL WOMEN'S DAY 2025 : FOR ALL WOMEN AND GIRLS – RIGHTS, EQUALITY, EMPOWERMENT



Prof. Veena Sachdeva

Department of Botany

Every year on March 8, the world unites to celebrate International Women's Day (IWD)—a powerful occasion to honour the achievements of women and amplify the call for gender equality. In 2025, the theme resonates deeper than ever: "For ALL Women and Girls: Rights. Equality. Empowerment." It's not just a slogan—it's a movement demanding that no woman or girl, anywhere, is left behind.

A Global Vision of Inclusivity

This year's theme underscores the importance of inclusion and intersectionality. Women and girls across the globe continue to face multiple forms of discrimination based on race, disability, age, caste, ethnicity, economic status, or geographic location. The 2025 campaign is a reminder that true empowerment cannot be achieved unless every woman and girl—regardless of her background or circumstances—has access to her rights, equal opportunities and the freedom to thrive.

The focus is on dismantling systems that perpetuate inequality—whether it be gender pay gaps, limited access to education, or the silencing of marginalized voices.

Empowerment in Action

Empowerment is more than a concept; it is the enabling of agency. In communities across the world, women are leading revolutions in politics, science, education, sports and entrepreneurship. IWD 2025 highlights stories of resilience and progress—young girls becoming coders in rural areas, women in conflict zones stepping up as peacebuilders and mothers transforming their households and societies through education and economic independence.

Governments, institutions and individuals are being called upon to not just celebrate women, but to invest in them—through equal laws, inclusive policies, gender-sensitive healthcare and safe environments that enable growth.

India's Role: Celebrating Shakti in All Forms

India's journey towards gender equality is a complex, yet inspiring one. While challenges persist—like access to education in rural areas, gender-based violence and economic disparities—India is also a land where women are breaking barriers every day. From female sarpanches, leading green revolutions to young Indian athletes rising on the global stage, Indian women are redefining what leadership looks like.

Initiatives such as Beti Bachao, Beti Padhao, increased representation of women in STEM and start-up schemes targeted at female entrepreneurs show a growing recognition of the need to empower women holistically and inclusively. This year, schools, workplaces and NGOs across India are organizing events, dialogues and campaigns around the IWD 2025 theme—ensuring that empowerment reaches every corner, caste and community.

How You Can Participate

- **Educate & Advocate:** Organize or attend discussions on women's rights and equality. Raise awareness online using hashtags like #IWD2025, #ForAllWomenAndGirls and #EmpowerHer.
- **Support Women-Owned Businesses:** Be intentional about your purchases—support brands and services led by women, especially those from marginalized backgrounds.
- **Mentor & Volunteer:** Share your skills with young girls or women in need through mentorship programs, community workshops, or literacy initiatives.
- **Challenge Inequality:** Speak up against bias, harassment, or discrimination in your workplace, school, or home.

A Future Worth Fighting For

International Women's Day 2025 is a call to collective responsibility. Empowering ALL women and girls isn't just a women's issue—it's a human rights issue. When women and girls rise, entire communities soar. Let us work towards a world where equality is not an exception, but the norm. Let us make room for every woman's voice and every girl's dream.

Because progress for one is not progress enough—until it's for all.

SHE IS



She is not made of silence,
But of song and storm and flame,
A voice that echoes mountains,
A soul no cage can tame.
She walks with centuries behind her,
Footsteps carved in stone and sand.
Bearing dreams passed down like torches,
Burning bright in steady hands.
She is scholar, she is mother,
She is builder, poet, guide.
She is laughter in the chaos,
She is calm against the tide.
In her eyes are maps of futures,
Drawn with ink of grit and grace,
She rewrites the lines of history,
Without needing to erase
She wears armor made of kindness,
Wields a blade of sharpened truth -
Not in search of domination,
But in guarding every youth.
She is every shade of courage.
Every whisper, every roar-
She is the voice that breaks the silence,
And the strength in evermore.
So let no one dim her brilliance,
Let no story go unheard.
For the world moves when she rises,
And her heartbeat shapes the world.

नारी हूँ मैं

अंजु गोयत

विद्यार्थी-सम्पादक

बी.एससी. (मेडिकल) अंतिम ईयर

अनुक्रमांक 1221331030155

नारी हूँ मैं, शक्ति भी हूँ,
कोमलता में एक ज्वाला भी हूँ।
चुप रहती हूँ, पर जब बोलूँ,
सच की सीधी परिभाषा भी हूँ।।
संघर्षों में पली बढ़ी हूँ,
हर आँधी से मैं लड़ चली हूँ।
आँसू पोंछ कर मुस्काई हूँ,
टूट कर फिर जुड़ आई हूँ।।
मैं माँ भी हूँ, मैं बेटी भी,
मैं रचयिता की रचना हूँ।
मैं धरती जैसी सहनशील,
मैं जल की निर्मल धारा हूँ।।
कभी सावित्री, कभी मीरा,
कभी लक्ष्मीबाई रणधारा ।
कभी कमल की धार बनी हूँ,
कभी विवेक की ज्योति अपारा ।।
मेरे कदम जहाँ भी पड़ते,
वहाँ नए रास्ते बनते हैं।
मैं चलती हूँ तो युग बदलते,
नारी के सपने सच होते हैं।।
मुझे मत समझो केवल निर्बल,
मैं धैर्य, मैं तेज प्रबल।
मैं इतिहास भी, मैं भविष्य भी,
मैं स्वयं ही अपना संबल।।

SUNITA WILLIAMS : A STAR BEYOND THE SKY



Shruti

B.Sc. Final Year

Roll No. 1221331030154

Up in the vast and endless space,
She soared with courage, strength & grace.
A dreamer bold, a heart so free,
She touched the stars for all to see.
Born to shine, to rise to lead,
With fire and will, she dared to speed.
From Gujarat's roots, her spirit grew.
With Indian Values strong and true.

Through trials tough and tests so grand,
She held her course with steady hand.
Floating high yet grounded deep,
A legacy the world will keep.

With Gita's wisdom in her & light.
And India's strength to guide her right,
She carried faith she carried pride,
With Bharat's soul right by her side.

Not just an astronaut in flight,
A beacon bright, a guiding flight.
A beacon bright, a guiding light,
For every girl who dares to dream,
She proved that nothing's too extreme.

So here we stand, with heads held high,
Inspired by one who touched the sky.
Oh, Sunita, fearless and true,
The universe is proud of you!



WOMEN EMPOWERMENT



Deesha

B.A. (English Hons)-II

Roll No. 1230226029

Women's empowerment is a multifaced concept that encompasses various aspects of a woman's life, including her economic, social, political and educational spheres. It signifies the ability of women to make choices and decisions that affect their lives, free from any form of discrimination or oppression.

Empowering women requires a holistic approach that address the root causes of gender inequality. This includes promoting access to education, healthcare and economic opportunities. It also involves challenging traditional gender roles and stereotypes, creating a society that values women's contributions and respects their rights.

By empowering women, we not only improve the lives of individual women but also contribute to a more just and equitable society for all. It is essential to create an environment where women can thrive and reach their full potential, contributing to the progress of their communities and the world at their communities and the world at large.



JOKES

Sakshi

B.A. (English Hons)-II

Roll No. 1230226016

Why do scientists trust atoms?
Because they make up everything.

Why was the maths book sad?
Because it had too many problems.

Why don't skeletons fight each other?
They don't have the guts!

What's the best time to go the dentist?
Tooth - hurty (2:30)

A man goes to the doctor and says,
"Doctor, wherever I touch, it hurts".
The Doctor asks,
"What do you mean?"
the man says, "When I touch my
shoulder, it really hurts. If I touch my
knee - OUCH! When I touch my forehead,
it really, really hurts."
The doctor says,
"I know what's wrong with you
you've broken your finger!"

FOREVER GRATEFUL

Yukta

B.A. (English Hons)-II

Roll No. 1230226060

A mother's love, a guiding light,
Shines bright in the darkest night.
With gentle hands and caring heart,
She guides us through life's every part.

Her smile, a ray of sunshine bright,
Illuminates our day and night.
Her voice, a soothing melody,
Echoes love and serenity.

With every step, with every fall,
She's there to catch us, through it all.
Her patience, kindness, and care,
Help us grow, and show us we matter.

A mother's love, a precious gift,
Forever in our hearts, it shifts.
Grateful for her endless love,
A treasure sent from above.

ENDLESS SUNSHINE

Priyanka

B.A. (English Hons)-II

Roll No. 1230226024

Summer's warmth awakens slow,
As petals bloom, and flowers grow.
The sun's bright rays upon our skin
Bring life to all, and let the warmth in.

Green fields stretch far and wide.
Sunflowers tall, side by side.
Children's laughter echoes free,
As summer's joy is meant to be.

Long days shine with radiant light,
Star-studded nights, a celestial sight.
Fireflies light up the evening air,
A magical world, beyond compare.

The breeze whispers secrets sweet,
As summer's warmth can't be beat.
A season of adventure, wild and free,
Summer's magic, for you and me.



नारी की फरियाद

हिमांशी दुआ

बी.कॉम. (ऑनर्स) तृतीय वर्ष

अनुक्रमांक- 1221331076003

यह कैसा जीवन पाया है,
हर तरफ मेरे इक साया है,
मैं कहाँ जाऊँ, किससे कहूँ
क्या दर्द मैंने पाया है।

जन्म लिया जग में जब से,
आँख खुली जग में तब से,
मुझे कोई कहे पराई है,
कोई दूसरे घर की जाई है।

मुखौटों की इस दुनिया में
जहाँ कदम-कदम पर राक्षस हैं,
कौन रक्षक है, कौन भक्षक है,
कैसे मैं पहचान करूँ।

क्यों बल मेरा क्षीण हुआ,
न जाने क्यों ये जन्म हुआ,
ये कैसी रचना तेरी प्रभु,
क्यों नारी जात बनाई है?

है अबला में ही बल निहित,
तुम रचना मेरी निराली हो,
हो धैर्य, ज्ञान की मूर्त तुम,
सौम्य और बलशाली हो।

तुम नारी नहीं भवानी हो,
तुम सकल जग की स्वामिनी हो,
तुम आदि भी, तुम अंत भी हो,
शक्ति स्वरूपा काली हो।

अरे! माँ, बहन व बेटा तुम,
माँ लक्ष्मी जी का अंश भी हो,
तुम हो सिया-सी प्रतिव्रता,
और राधा-सी हो प्रमिका।

अश्रु पोंछो तुम, हे नारी।
तुम हो नहीं कमजोर बहन,
तुम हो गंगा-सी पवित्र,
वंदनीय है तुम्हारा चरित्र।



भारत में महिला सशक्तिकरण में एआई की भूमिका



डॉ. राधा राठी
प्राणीशास्त्र विभाग

भारत में, महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया रही है। लगातार समस्याओं का समाधान करके हम ताकत हासिल कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं को सशक्त बनाने और जीवन के सभी पहलुओं में उनकी समान भागीदारी की गारंटी देने की आवश्यकता का एहसास बढ़ रहा है। भारत में महिलाओं ने शिक्षा, राजनीति, उद्यमिता और अन्य क्षेत्रों में बड़ी प्रगति हासिल की है। महिलाओं की शिक्षा पर अधिक जोर देना महिला सशक्तिकरण में भारत की प्रमुख सफलताओं में से एक है।

महिला सशक्तिकरण का महत्व : न्यायसंगत और समान समाज के विकास के लिए महिला सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है। इसका तात्पर्य ऐसे माहौल की स्थापना से है जिसमें महिलाएँ अपने जीवन पर नियंत्रण रख सकें, सशक्त निर्णय ले सकें और जीवन के सभी पहलुओं में सक्रिय रूप से शामिल हो सकें। यहाँ कुछ मुख्य कारण दिए गए हैं कि महिला सशक्तिकरण इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

1. **लैंगिक समानता:** लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना महत्वपूर्ण है। यह स्वीकार करता है कि महिलाओं के पास पुरुषों के समान ही अधिकार और क्षमताएँ हैं और उनके साथ समान सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। हम महिलाओं को सशक्त बनाकर और पुरानी लैंगिक भूमिकाओं और रूढ़ियों को तोड़कर अधिक समावेशी और समतापूर्ण समाज को बढ़ावा दे सकते हैं।

2. **आर्थिक विकास:** महिलाएँ वैश्विक आबादी का एक बड़ा हिस्सा हैं, और श्रम शक्ति में उनकी सक्रिय भागीदारी आर्थिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। सशक्त महिलाएँ अपने परिवार की आय में योगदान देने, शिक्षा में निवेश करने और उद्यमिता में संलग्न होने की अधिक संभावना रखती हैं। इससे घरेलू आय बढ़ती है, गरीबी कम होती है और स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

3. **शिक्षा और स्वास्थ्य:** महिलाओं को सशक्त बनाना शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक अधिक पहुँच से जुड़ा हुआ है। सशक्त महिलाओं में शिक्षा प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है, जिससे उनके और उनके परिवार के स्वास्थ्य में सुधार होता है। शिक्षित और स्वस्थ महिलाएँ अपने प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में उचित निर्णय ले सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप माँ और नवजात शिशु की मृत्यु दर में कमी आती है।

4. **सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी :** महिलाओं को सशक्त बनाना उन्हें सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होने की अनुमति देता है। हम सभी स्तरों पर निर्णय लेने में महिलाओं को शामिल करके उनके अद्वितीय दृष्टिकोण और विशेषज्ञता से लाभ उठा सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अधिक समावेशी नीतियाँ और कार्यक्रम बन सकते हैं। राजनीति और नेतृत्व के पदों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी अधिक संतुलित शासन और बेहतर सामाजिक परिणामों में मदद करती है।

5. **भेदभाव के चक्र को तोड़ना:** महिलाओं को सशक्त बनाना भेदभाव और असमानता के अंतर-पीढ़ीगत चक्र को समाप्त करने में योगदान देता है। सशक्त महिलाएँ भावी पीढ़ियों के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करती हैं। महिलाओं को उनकी आकांक्षाओं का पालन करने, पारंपरिक मानकों को चुनौती देने और समानता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। निष्पक्ष और समृद्ध समाज प्राप्त करने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। यह लैंगिक समानता को बढ़ावा दे सकता है, आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है, शिक्षा और स्वास्थ्य परिणामों में सुधार कर सकता है, सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी को बढ़ा सकता है और भेदभाव के चक्र को तोड़ सकता है। भारत ने शिक्षा, राजनीति और व्यवसाय में प्रगति की है, है, लेकिन वास्तविक लैंगिक समानता प्राप्त करने और ऐसा माहौल बनाने के लिए अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है जिसमें महिलाएँ फल-फूल सकें। भारत

में महिलाओं के लिए अधिक समावेशी और सशक्त वातावरण बनाने के लिए समाज, सरकार और व्यक्तियों को मिलकर काम करना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : AI या कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो बुद्धिमान मशीनों के निर्माण से संबंधित है जो ऐसी गतिविधियों करने में सक्षम हैं जिनके लिए सामान्य रूप से मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। AI के कई क्षेत्रों में अनुप्रयोग हैं, जिनमें स्वास्थ्य सेवा, वित्त, परिवहन और अन्य शामिल हैं। यह सिस्टम को डेटा की विशाल मात्रा का विश्लेषण करने, पैटर्न खोजने और शिक्षित निर्णय लेने की अनुमति देता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक दक्षता और सटीकता होती है। AI का उपयोग कई तरह के अनुप्रयोगों में किया जाता है, जिसमें चिकित्सा निदान, धोखाधड़ी का पता लगाना, चालक रहित कारें, अनुरूप सिफारिशें, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और आभासी सहायक शामिल हैं। इसमें मानव प्रतिभाओं को बढ़ावा देने और नवाचार को बढ़ावा देने के द्वारा व्यवसायों और समाज को बदलने की अपार क्षमता है।

AI को दो श्रेणियों में बांटा गया है : संकीर्ण AI और सामान्य AI। संकीर्ण AI, जिसे आमतौर पर कमजोर AI कहा जाता है, का उद्देश्य कुछ खास काम करना या खास मुद्दों को संबोधित करना है। इसका इस्तेमाल वॉयस असिस्टेंट, पिक्चर रिकप्रिशन सिस्टम, रिकमेंडेशन एल्गोरिदम और सेल्फ-ड्राइविंग जैसे अनुप्रयोगों में व्यापक रूप से किया जाता है। दूसरी ओर, सामान्य AI, जिसे मजबूत AI या AGI (कृत्रिम सामान्य बुद्धि) के रूप में भी जाना जाता है, विभिन्न विषयों में मानव स्तर की बुद्धि और कौशल की आकांक्षा रखता है। सामान्य AI की खोज अध्ययन और विकास का एक सतत विषय है।

महिला सशक्तिकरण के लिए AI की क्षमता

- 1. शिक्षा और कौशल विकास :** AI में शिक्षा और कौशल विकास को बदलने की क्षमता है, जिससे महिलाओं को उच्च गुणवत्ता वाले सीखने के अवसरों तक समान पहुँच मिल सकती है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और AI-संचालित एप्लिकेशन महिलाओं को नए कौशल सीखने और नई जानकारी प्राप्त करने की अनुमति देते हुए अनुरूप शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। इन तकनीकों में शैक्षिक अंतर को पाटने और महिलाओं को अपने सपनों को पूरा करने, उनकी रोजगार क्षमता और आर्थिक स्वतंत्रता में सुधार करने की क्षमता है।
- 2. रोजगार और उद्यमिता:** निष्पक्ष और पारदर्शी भर्ती प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाकर, AI कार्यस्थल में लैंगिक पूर्वाग्रहों को कम कर सकता है। AI-संचालित तकनीकों से नौकरी के विज्ञापनों, चयन प्रक्रियाओं और प्रदर्शन समीक्षाओं में पूर्वाग्रहों को कम किया जा सकता है। इसके अलावा, AI दूरस्थ रोजगार और लचीले घंटों को बढ़ावा दे सकता है, जिससे महिलाओं को उद्योग में प्रवेश करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने की अतिरिक्त संभावनाएँ मिल सकती हैं। AI महिलाओं को बाजार डेटा प्रदान करके, गतिविधियों को स्वचालित करके और निर्णय लेने में सुधार करके अपने स्वयं के उद्यम शुरू करने में भी मदद कर सकता है।
- 3. स्वास्थ्य सेवा और कल्याण:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में स्वास्थ्य सेवा के परिणामों को बेहतर बनाने और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक महिलाओं की पहुँच बढ़ाने की क्षमता है। AI-संचालित समाधान बीमारी की पहचान और शुरुआती पहचान, व्यक्तिगत उपचार रणनीतियों और दूरस्थ रोगी निगरानी में मदद कर सकते हैं। इन सुधारों में स्वास्थ्य सेवा असमानताओं को खत्म करने और महिलाओं, विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं के कल्याण में सुधार करने की क्षमता है।
- 4. सुरक्षा और संरक्षण:** AI-आधारित समाधान महिलाओं को उत्पीड़न, हिंसा और सुरक्षा जैसे मुद्दों से निपटने में सुरक्षित महसूस करने में मदद कर सकते हैं। महिलाओं के खिलाफ अपराधों को रोकने में स्मार्ट निगरानी प्रणाली, चेहरा पहचान तकनीक और भविष्य कहनेवाला विश्लेषण की मदद ली जा सकती है। AI-संचालित स्मार्टफोन एप्लिकेशन वास्तविक समय की आपातकालीन सहायता दे सकते हैं, जिससे महिलाएँ सहायता माँग सकती हैं और जल्द से जल्द मामलों की रिपोर्ट कर सकती हैं।
- 5. सामाजिक जागरूकता और वकालत:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने और सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। NLP एल्गोरिदम लैंगिक पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों और भेदभावपूर्ण व्यवहारों की खोज करने के लिए सोशल मीडिया चैट और समाचार लेखों जैसे विशाल मात्रा में डेटा को

स्कैन कर सकते हैं। इस डेटा का उपयोग अधिक समावेशी और लैंगिक समान समाज को बढ़ावा देने के लिए लक्षित जागरूकता अभियान और नीतियाँ बनाने के लिए किया जा सकता है।

6. आर्थिक सशक्तिकरण : AI रोजगार और उद्यमिता के नए रास्ते प्रदान करके महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह महिलाओं को डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने, ऑनलाइन मार्केटप्लेस तक पहुंचने और घर से काम करने के अवसरों का पता लगाने में सक्षम बना सकता है। भारत सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम और विभिन्न ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म जैसी पहलों ने महिलाओं के लिए अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के दरवाजे खोल दिए हैं।

7. लैंगिक समानता: AI में लैंगिक पूर्वाग्रहों से निपटने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की क्षमता है। निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से मानवीय पूर्वाग्रहों को हटाकर, AI एल्गोरिदम महिलाओं के लिए भर्ती, पदोन्नति और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच जैसे क्षेत्रों में उचित अवसर सुनिश्चित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, AI-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट लैंगिक हिंसा और महिला अधिकारों पर सहायता और जानकारी प्रदान कर सकते हैं। जिससे महिलाओं को सहायता और समर्थन प्राप्त करने में सशक्त बनाया जा सकता है।

महिला सशक्तिकरण में AI की चुनौतियाँ और जोखिम : महिला सशक्तिकरण के लिए AI में मौजूदा लैंगिक पूर्वाग्रहों को मजबूत करने, डिजिटल विभाजन को बढ़ाने और गोपनीयता, डेटा सुरक्षा और एल्गोरिदमिक जवाबदेही के बारे में चिंताएँ बढ़ाने की क्षमता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, AI विकास, कठोर परीक्षण और मजबूत नियामक ढाँचों में विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

1. एआई विकास में विविधता की कमी: एआई अनुसंधान में विविधता की कमी लंबे समय से चिंता का विषय रही है, जो प्रगति में बाधा डालती है और इस क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण को सीमित करती है। उल्लेखनीय तकनीकी विकास के बावजूद, एआई अनुसंधान, विकास और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है।

2. गोपनीयता और डेटा सुरक्षा चिंता: एआई तकनीक ने हमारे जीवन के कई हिस्सों को बदल दिया है, जिससे बहुत सारी संभावनाएँ और आसानी मिली है। हालांकि, यह गोपनीयता और डेटा सुरक्षा के बारे में महत्वपूर्ण मुद्दे उठाता है। आम सिस्टम और गैजेट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को शामिल करने के परिणामस्वरूप भारी मात्रा में व्यक्तिगत डेटा एकत्र और विश्लेषण किया जा रहा है, जिससे ऐसी चिंताएँ पैदा हो रही हैं जिनका समाधान किया जाना चाहिए।

3. नैतिक विचार: जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन के विभिन्न तथ्यों में अधिक अंतर्निहित होती जा रही है, एआई से जुड़े नैतिक प्रश्न महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। स्वचालन से प्रभावित होने वाले श्रमिकों को पुनः प्रशिक्षित करने और कौशल प्रदान करने के उपायों पर विचार किया जाना चाहिए। एआई के कारण मौजूदा सामाजिक, आर्थिक असमानताओं को और खराब होने से बचाने और एआई-आधारित सेवाओं और अवसरों तक उचित पहुँच की गारंटी देने के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए।

4. डिजिटल डिवाइड : डिजिटल डिवाइड उन लोगों के बीच का अंतर है जिनके पास डिजिटल तकनीक तक पहुँच और समझ है और जो नहीं है। जबकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) में नए समाधान प्रदान करके इस अंतर को दूर करने की क्षमता है, यह ऐसे मुद्दे भी लाता है जो मौजूदा अंतर को और खराब करने की क्षमता रखते हैं।

हम एक अधिक समतावादी समाज का निर्माण कर सकते हैं, जहाँ डिजिटल अंतर को पाटकर और AI प्रणालियों में पूर्वाग्रहों को कम करके AI के लाभ सभी के लिए उपलब्ध हों। सरकारी पहल और नीतियाँ भारत सरकार ने देश में AI विकास को बढ़ावा देने के लिए पहल और नीतियाँ शुरू की हैं। राष्ट्रीय AI रणनीति का उद्देश्य भारत को AI अनुसंधान और विकास में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना है, जबकि AI पर राष्ट्रीय कार्यक्रम स्वास्थ्य सेवा, कृषि, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे पर केंद्रित है। इसके अतिरिक्त, डेटा गोपनीयता और AI के नैतिक उपयोग को संबोधित करने के लिए नियामक ढाँचे विकसित किए जा रहे हैं। इन पहलों और नीतियों का उद्देश्य नवाचार को बढ़ावा देना, आर्थिक विकास को गति देना और जिम्मेदार AI परिनियोजन सुनिश्चित करना है।

FORM-IV

(See Rule-8)

Statement about ownership and the other particulars of the magazine "Vandana" under rules of the registration of Newspapers.

Place of Publication : Rohtak

Periodicity of its publication : Annual

Printer's Name : Jawahar Printing Press

Nationality : Indian

Address : Raj Mahal, Jhajjar Road, Rohtak

Publisher's Name : Dr. Shamsheer Singh Hooda

Nationality : Indian

Address : Principal, Govt. P.G. College for Women, Rohtak

Editor's Name : Dr. Rajesh Kumar, Assistant Professor, Dept. of Hindi

Nationality : Indian

Address : Govt. P.G. College for Women, Rohtak

Ownership : Dr. Shamsheer Singh Hooda

Principal, Govt. P.G. College for Women, Rohtak

I, Dr. Shamsheer Singh Hooda, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Dr. Shamsheer Singh Hooda

Principal,

Govt. P.G. College for Women, Rohtak

Note: The Contributors to "Vandana" are individually responsible for the originality or otherwise of their articles including the consequences thereof.

Printed by : Jawahar Printing Press, Jhajjar Road, Rohtak. 01262-253336

and Published by Dr. Shamsheer Singh Hooda